॥ राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय ॥

पोथी

प्रेमबानी राधास्वामी

(दूसरी जिल्द)

चन्द्रप्रभा प्रेस बनारस में छापी गई व

राधास्वामी ट्रस्ट ने शाया की ।

सन् १९०६ ई०

१००० दूसरी बार] [क़ीमत २)

सूचीपत्र शब्द प्रेमबानी।

भाग दूसरा।

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी जिल्द दूसरी

॥ भारत बानी भाग तीसरा बचन नवां ॥

॥ शब्द १ ॥

हे राधास्वामी सतगुरू दयारा ।
गत तुम्हरी अति अगम अपारा ।
मोहिं निरबल को लीन उबारा ॥ १ ॥
माया भाव हटाया सकला ।
दरशन को मन तड़पत बिकला ।
खैंच चरन में दिया सहारा ॥ २ ॥
गुरू संगत में लीन मिलाई ।
सुरत शब्द दिया भेद सुहाई ।
साध संग मोहिं लीन सुधारा ॥ ३ ॥

राधास्वामी मोहिं अति दीन लखा री ।
दिन दिन मेरी दया बिचारी ।
मेहर दया से लीन संवारा ॥ ४ ॥
सतसंग करत हुआ मन चूरा ।
करम भरम सब कीने दूरा ।
काल बिघन सब दीन निकारा ॥ ५ ॥
सेवा करत प्रीत नई जागी ।
सुरत निरत गुरु चरनन पागी ।
गुरु सरूप लागा अति प्यारा ॥ ६ ॥
गुरु छबि देख हुई मतवारी ।
तन मन धन चरनन पर वारी ।
दरशन पर जाऊं बलिहारा ॥ ७ ॥
गुरु की दया कहूं कस गाई ।
बालक सम मोहिं गोद बिठाई ।
औगुन मेरे कुछ न बिचारा ॥ ८ ॥
गुरु परतीत हिये में छाई ।
दिन दिन होती प्रीत सवाई ।
राधास्वामी सरन अब मिला अधारा ॥ ९ ॥

जग ब्योहार लगा अब फीका।
तज जग भोग प्रेम रस पीखा।
झूठ लगा सब काल पसारा ॥१०॥
सुरत शब्द अभ्यास कराई।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाई।
निरखी घट में अजब बहारा ॥ ११ ॥
राधास्वामी मेहर कहूं मैं कैसे।
सहजहि मोहिं उबारा जैसे।
छिन छिन करती शुकर पुकारा ॥१२॥
छिन छिन हियरे उमंग बढ़ावत।
कर सिंगार करूं गुरु आरत।
नइ नइ सामां कर बिस्तारा ॥ १३ ॥
भूषन बस्तर अजब बनाये।
कर सनमान गुरू पहिनाये।
अचरज सोभा निरख निहारा ॥१४॥
अनेक पदारथ किये तैयारा।
गुरु आगे धरे साज संवारा।
सोभा बाढ़ी गुरु दरबारा ॥१५॥

बिंजन अनेक थाल भर लाई ।
सतगुरु सन्मुख भोग धराई ।
मान लिया गुरु कर अति प्यारा ॥१६॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये ।
देख समा चित में हरखाये ।
सब मिल गावें गुरु गुन सारा ॥१७॥
आरत धूम मची अब भारी ।
सतगुरु चरनन आरत धारी ।
गगन मंडल में बजा नगारा ॥१८॥
राधास्वामी दया सेव बन आई ।
भाग आपना कहा सराही ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपारा ॥१९॥

॥ शब्द २ ॥

प्रीत गुरु छाय रही तन में ।
ध्यान गुरु लाय रही मन में ॥ १ ॥
गाय रही राधास्वामी गुन छिन में ।
सुमिर रही राधास्वामी पल खिन में ॥२॥

परख रही मेहर गुरू जिये में ।
सुनत रही राधास्वामी धुन हिये में ॥३॥
दया की गुरू ने कीनी दात ।
शब्द रस लेत सुरत दिन रात ॥ ४ ॥
सरस धुन घट में बाज रही ।
त्याग दई मन से मान मई ॥ ५ ॥
सुरत मन चालत निज घर बाट ।
अहंग मम छोड़ दिया निज घाट ॥६॥
सुनत रही घंटा संख पुकार ।
झांक रही सूरत जोत अकार ॥ ७ ॥
बंक धस निरखा त्रिकुटी धाम ।
समझ लई महिमा में गुरू नाम ॥ ८ ॥
दसम दर पहुंची पाट खुलाय ।
अमीं रस छिन छिन पियत अघाय ॥९॥
महासुन पार गई गुरू लार ।
सुनत रही गुप्त शब्द धुन चार ॥१०॥
भंवर गढ़ कीना जाय निवास ।
करत धुन मुरली संग बिलास ॥ ११ ॥

अमरपुर जाय सुनी धुन बीन।
मगन हुई सतगुरु लीला चीन ॥ १२ ॥
अलखपुर पहुंची लगन बढ़ाय।
पुरुष का दरशन अद्भुत पाय ॥ १३ ॥
अगमपुर निरखा जाय समाज।
करत जहां अगम पुरुष कुल राज ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार।
उमंग कर आई आरत धार ॥ १५ ॥
चरन में दिये वार तन मन।
हुए राधास्वामी गुरु परसन ॥ १६ ॥
मेहर से लीना अंग लगाय।
कहूं क्या आनंद बरना न जाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

चरन गुर हिरदे धार रहा।
दया राधास्वामी मांग रहा ॥ १ ॥
नित्त गुरु दर्शन करता आय।
हिये में छिन छिन प्रीत बढ़ाय ॥ २ ॥

उमंग कर परशादी लेता ।
चरन गुरु हिरदे में सेता ॥ ३ ॥
प्रेम संग गुरु बानी गाता ।
नाम राधास्वामी नित ध्याता ॥ ४ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता ।
हिये में दृढ़ निश्चय धरता ॥ ५ ॥
गावता गुरु गुन उमंग उमंग ।
प्रीत से करता सतगुरु संग ॥ ६ ॥
आरती गाई तन मन वार ।
मेहर राधास्वामी पाई सार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

चरन गुरु हिरदे आन बसाय ।
सरन में निस दिन उमगत धाय ॥ १ ॥
गुरू से हरदम करता प्यार ।
बचन उन धरता हिये मंझार ॥ २ ॥
आरती गावत उमँग उमंग ।
गुरू का करता निस दिन संग ॥ ३ ॥

मगन होय नये नये बस्तर लाय ।
गुरू को देता आप पहिनाय ॥ ४ ॥
गुरू की सोभा निरख निहार ।
हिये में नित्त बढ़ाता प्यार ॥ ५ ॥
गुरू संग खेलत दिन और रात ।
निरख छबि गुरु के बल बल जात ॥६॥
उमंग कर लेता गुरू परशाद ।
चरन राधास्वामी रखता याद ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरू मोहिं दीना भेद अपारी ।
शब्द धुन सुन हुआ आनंद भारी ॥१॥
सुरत की लागी घट में ताड़ी ।
धुनन की होत जहाँ झनकारी ॥ २ ॥
चरन में निस दिन प्रेम बढ़ारी ।
मेहर गुरु कीनीं मनुआँ हारी ॥ ३ ॥
थकित होय बैठी माया नारी ।
सुरत रही पियत अमीं रस सारी ॥४॥

छोड़ नभ चढ़ गई गगन अटारी ।
चंद्र लख सेत सूर निरखारी ॥ ५ ॥
अमरपुर दर्शन पुर्ष निहारी ।
सुनत रही मधुर बीन धुन सारी ॥ ६ ॥
अलख और अगम प्यार कीना री ।
हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी ॥ ७ ॥
संत मोपै मेहर करी अति भारी ।
दई मोहिं परशादी कर प्यारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

आरती लाया सेवक पूर ।
चरन गुरु प्रेम रहा भर पूर ॥ १ ॥
हिये का लीना थाल सजाय ।
प्रीत की लीनी जोत जगाय ॥ २ ॥
आरती गावत सहित उमंग ।
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग ॥ ३ ॥
बजत रहा घट अनहद बाजा ।
संख और घंटा धुन साजा ॥ ४ ॥

सुनत रहा गरज मेघ मिरदंग ।
सुन्न में बाजी धुन सारंग ॥ ५ ॥
मधुर धुन मुरली बाज रही ।
अमरपुर बीना गाज रही ॥ ६ ॥
मेहर गुरु दीना यह साजा ।
सरन राधास्वामी पाय राजा ॥७॥

॥ शब्द ७ ॥

मगन मन गुरु सन्मुख आया ।
आरती प्रेम सहित लाया ॥१॥
पदारथ नये नये हित से लाय ।
धरे गुरु सन्मुख थाल भराय ॥२॥
सजा गुरु भक्ती की थाली ।
प्रीत गुरु जीत लई बाली ॥३॥
आरती हंसन संग गाता ।
उमंग अब नई नई दिखलाता ॥४॥
धूम आरत की हुई भारी ।
स्वामी ने मेहर करी न्यारी ॥५॥

शब्द धुन घट में डाला शोर।
घटा अब काल करम का ज़ोर ॥६॥
मेहर सतगुरु परशादी पाय।
चरन राधास्वामी परसे आय ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

सरन गुरु हुआ मोहिं आधार।
चरन में आई धर कर प्यार ॥१॥
करूं नित दर्शन दृष्ट सम्हार।
पिऊं मैं चरन अमीं रस सार ॥२॥
करूं गुरु आरत नित्त नवीन।
रहूं गुरु चरनन दीन अधीन ॥३॥
हंस जुड़ मिल आरत गाते।
निरख गुरु छबि हिये मगनाते ॥४॥
बजत घट बाजे घंटा संख।
सुरत धस चढ़ती नाली बंक ॥५॥
गगन में धुन मिरदंग सुनाय।
दसम दर चन्द्र रूप दरसाय ॥६॥

भंवर में सेत सूर परकास ।
करूं धुन मुरली संग बिलास ॥७॥
अमरपुर होय अलख लखिया ।
परे चढ़ दरस अगम तकिया ॥८॥
वहां से राधास्वामी धाम गई ।
उमंग कर राधास्वामी चरन पई ॥९॥

॥ शब्द ९ ॥

हुआ मन गुरु चरनन आधीन ।
लखी गुरु मूरत घट में चीन ॥१॥
भरोसा गुरु चरनन में लाय ।
प्रेम गुरु छिन छिन रहूं जगाय ॥२॥
टेक गुरु धारी कर बिस्वास ।
मगन होय करता चरन निवास ॥३॥
जपत रहुं निस दिन राधास्वामी नाम ।
धार रहूं हिये में भक्ति अकाम ॥४॥
करें गुरु सब बिधि मेरा काज ।
देयं मोहिं बख़्शिश भक्ती राज ॥५॥

उमंग मन गुरु सेवा में लाग।
बढ़ावत छिन छिन अपना भाग ॥६॥
मेरे मन चिन्ता यही समाय।
लेउं मैं किस बिधि गुरू रिझाय ॥७॥
दीन अंग मांगू गुरु की मेहर।
हटाऊं मन की सबही लहर ॥८॥
चरन में चित नित जोड़ रहूं।
शब्द धुन सुन नभ फोड़ चढ़ूं ॥९॥
निरख फिर घट में जोत उजार।
गगन गुरु धारूं हिये में प्यार ॥१०॥
सुन्न चढ़ लखा भवंर अस्थान।
लगा धुन मुरली से अब ध्यान ॥११॥
अमरपुर किये सतगुरु दर्शन।
वार रही तन मन गुरु चरनन ॥१२॥
अलख गुरु लीना चरन मिलाय।
अगम गुरु मेहर करी अधिकाय ॥१३॥
दया राधास्वामी की गहिरी।
सुरत जाय उन चरनन ठहरी ॥१४॥

परम पद संतन का यह धाम।
उठत जहां छिन छिन धुन निज नाम ॥१५॥

॥ शब्द १० ॥

प्रेम प्रकाशा सूरत जागी।
शब्द गुरू के चरनन लागी ॥१॥
सील छिमा चित आय समाई।
काम क्रोध अब गये नसाई ॥२॥
सतसंग में मन चित्त खिलाना।
दरस अमीरस नित्त पिलाना ॥३॥
मन हुआ लीन गुरू चरनन में।
सुरत लगी अब जाय धुनन में ॥४॥
घट भीतर अब देख उजारी।
तन मन की गई सुद्ध बिसारी ॥५॥
जोत निरख फिर देखा सूर।
सारंग सुनत हुआ मन चूर ॥६॥
मुरली धुन चढ़ गुफा बजाई।
अमर लोक सतशब्द सुनाई ॥७॥

अलख अगम चढ़ पहुंची छिन में।
रली जाय राधास्वामी चरनन में ॥८॥
वहां आरती प्रेम सिंगारी।
राधास्वामी दया करी कर प्यारी ॥९॥

॥ शब्द ११ ॥

भाग जगे गुरु चरनन आई।
राधास्वामी संगत सेवा पाई ॥१॥
दई जनाय गुरू हितकारी।
परमारथ की महिमां भारी ॥२॥
दिन दिन प्रीत नवीन जगाता।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाता ॥३॥
सतसंगियन संग प्रीत बढ़ाता।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमाता ॥४॥
सुरत शब्द का पाया भेद।
जनम जनम के मिट गये खेद ॥५॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारा।
करम भरम का कूड़ा झाड़ा ॥६॥

गुरु परतीत पकाऊं दिन दिन ।
राधास्वामी प्रेम जगाऊं छिन छिन ॥७॥
जगत भाव सब ही तज डारूं ।
उमंग सहित गुरु आरत धारूं ॥८॥
बिनय सुनो गुरु दया बिचारी ।
सत संगत में रहूं सदारी ॥९॥
निस दिन दरस गुरू का पाऊं ।
चरनामृत परशादी खाऊं ॥१०॥
नित गुन गाऊं चरन धियाऊं ।
राधास्वामी २ सदा मनाऊं ॥११॥

॥ शब्द १२ ॥

चरन गुरु हिये अनुराग सम्हार ।
सुरत प्यारी आई गुरु दरबार ॥१॥
जगत का भय और भाव निकार ।
बचन गुरु सुनती चित्त सम्हार ॥२॥
दरस कर होत मगन हर बार ।
ताक गुरु नैन बढ़ावत प्यार ॥३॥

गुरू से ले अचरज उपदेश।
तजत अब छिन २ माया देश॥ ४॥
अधर घर प्रीत लगी सारी।
लगी रूत फीकी संसारी॥ ५॥
शब्द धुन सुनत हुआ मन चूर।
प्रेम गुरु रहा हृदे में पूर॥ ६॥
जगत के दुख सुख बिसरत जायं।
चरन गुरू धारत हिरदे माहिं॥ ७॥
कहूं क्या महिमां गुरु सतसंग।
उलट कर फेरे मन के अंग॥ ८॥
पड़ा था भोगन में बीमार।
हुआ अब चरनन रस आधार॥ ९॥
भरमता जग में इच्छा लार।
उनट कर धारा गुरु रंग सार॥१०॥
पिरेमी जन लागें प्यारे।
संग उन गुरु सेवा धारे॥११॥
समझ में आई सतसंग रीत।
जगी गुरु चरनन नई परतीत॥१२॥

निरख गुरु संगत की लीला ।
भरम तज हुए मन चित सीला ॥१३॥
गुरू का सतसंग नित चाहूं ।
प्रीत नई हिये में उमगाऊं ॥१४॥
मेहर मोपै कीजे दीन दयार ।
रहूं नित राधास्वामी चरनन लार ॥१५॥

॥ शब्द १३ ॥

चरन गुरु सेवा धार रहा ।
बिघन मन सहज निकार रहा ॥ १ ॥
पड़ा था सतसंग से मैं दूर ।
भाग से पाया दरस हजूर ॥ २ ॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय ।
कुटंब सब लीना चरन लगाय ॥ ३ ॥
पिरेमी जन के दर्शन पाय ।
मगन होय करता सेवा धाय ॥ ४ ॥
देख नित गुरु सतसंग बिलास ।
उमंग मन चाहत चरन निवास ॥ ५ ॥

चित्त में धारूं गुरु उपदेस ।
सुनत रहूं महिमां सतगुरु देस ॥ ६ ॥
नित्त गुरु बानी पढ़त रहूं ।
नाम राधास्वामी जपत रहूं ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत पियारी उमगत आई ।
राधास्वामी चरनन सीस नवाई ॥ १ ॥
सतसंग की अभिलाख बढ़ाई ।
राधास्वामी नाम जपत सुख पाई ॥ २ ॥
नित गुरु दरशन धावत करती ।
रूप सोहावन हिये में धरती ॥ ३ ॥
आरत गावत होत अनंदा ।
करम भरम का काटा फंदा ॥ ४ ॥
सतसंगियन से करती मेल ।
मन इंद्री संग तजती केल ॥ ५ ॥
उमंग बढ़ावत प्रेम जगावत ।
आरत बानी नित निज गावत ॥ ६ ॥

नित गुन गावत जागे भाग ।
राधास्वामी चरन सुरत रही लाग ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

सतगुरु चरन प्रीत भई पोढ़ा ।
लाय रही अब सूरत डोरा ॥ १ ॥
नित्त बिलास नवीन निरखती ।
मेहर दया घट माहिं परखती ॥ २ ॥
मन और सूरत अधर सरकते ।
शब्द अमीं रस पाय फड़कते ॥ ३ ॥
गुरु दयाल की दया निहारत ।
छिन छिन जग भय भाव बिसारत ॥४॥
घंटा संख सुनत मगनानी ।
त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप दिखानी ॥ ५ ॥
सुन में जाय किये अस्नान ।
हंसन रूप देख हरखान ॥ ६ ॥
गुफा परे जाय सुनी बीन धुन ।
अलख अगम दरशन किया पुन पुन ॥७॥

राधास्वामी धाम गई पुन धाई ।
मेहर हुई स्रुत चरन समाई ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सतगुरु चरन अनुराग ।
पिरेमन हिये धर आई ॥ १ ॥
जग भय लज्या त्याग ।
सुरत गुरु चरनन धाई ॥ २ ॥
जगा मेरा अचरज भाग ।
मेहर गुरु करी है बनाई ॥ ३ ॥
जगत भोग और राग ।
तजत मन सोच न लाई ॥ ४ ॥
सूरत छिन छिन जाग ।
शब्द संग अधर चढ़ाई ॥ ५ ॥
सुन घट धुन और राग ।
सुरत मन अति हरखाई ॥ ६ ॥
निरखत नभ काला नाग ।
गुरू बल मार गिराई ॥ ७ ॥

छूट गई संगत मन काग।

हंस संग मेल मिलाई ॥ ८ ॥

अब मिट गए कल मल दाग़।

मेहर गुरु कीन सफ़ाई ॥ ९ ॥

गुरु दीना शब्द सोहाग।

अधर पद रहूं लौ लाई ॥ १० ॥

राधास्वामी आरत धार।

प्रेम से निस दिन गाई ॥ ११ ॥

॥ शब्द १७ ॥

अचरज लीला देख मगन मन।

उमंग उमंग करती गुरु दरशन ॥ १ ॥

हरख हरख गावत गुरु बानी।

परख परख गुरु मेहर निशानी ॥ २ ॥

नित नित सुनती अनहद तूर।

खटपट मन की करती दूर ॥ ३ ॥

झटपट सुरत अधर को जाती।

लटपट धुन सुन माहिं समाती ॥ ४ ॥

चमन चमन फुलवार दिखानी।
बाग़ बाग़ हिये माहिं खिलानी ॥ ५ ॥
सुरत शब्द संग करती मेला।
त्रिकुटी धाम करत नित केला ॥ ६ ॥
गुरु के रंग रंगी सुत प्यारी।
आगे चढ़ सत शब्द सम्हारी ॥ ७ ॥
अलख अगम के चढ़ गई पार।
राधास्वामी चरन किया दीदार ॥ ८ ॥
राधास्वामी मेहर पाई मैं आज।
सहज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥

॥ शब्द १८ ॥

आज हंसन का जुड़ा समाज।
पिरेमी लाया आरत साज ॥ १ ॥
बिरह की थाली कर धारी।
जुगत की जोत जगी न्यारी ॥ २ ॥
भाव के बिंजन लिए सजाय।
प्रीत के बस्तर गुरु पहिनाय ॥ ३ ॥

उमंग उठी हिरदे में भारी ।
प्रेम संग आरत गुरु धारी ॥ ४ ॥
बना आरत का अद्‌भुत साज ।
दया गुरु शब्द रहा घट गाज ॥ ५ ॥
होत अस घट में धुन बन बन ।
धन्य राधास्वामी गुरु घन घन ॥ ६ ॥
सुनी फिर और धुन्न घन घन ।
मगन होय त्रिकुटी धाया मन ॥ ७ ॥
बोल रही जहां निज धुन मिरदंग ।
सुन्न चढ़ जागी धुन सारंग ॥ ८ ॥
भंवर में मुरली रही पुकार ।
अमरपुर सुनी बीन धुन सार ॥ ९ ॥
अलखपुर सुनी गुप्त धुन जाय ।
अगमपुर दरस अगम पुर्ष पाय ॥१०॥
उमंग कर पहुंची राधास्वामी धाम ।
परम गुरु अकह अपार अनाम ॥११॥
दरस कर सूरत पाई शांत ।
भीड़ तज होगई अब एकांत ॥१२॥

॥ शब्द १९ ॥

दरस गुरु हिरदे धारा नेम ।
जगाती निस दिन घट में प्रेम ॥ १ ॥
भोग ले नित सन्मुख आती ।
उमंग कर परशादी खाती ॥ २ ॥
देख गुरु द्वारे नया विलास ।
हाज़री देती निस और बास ॥ ३ ॥
पिरेमी आवें नित गुरु पास ।
देख उन मन में होत हुलास ॥ ४ ॥
बढ़त नित सतसंग की महिमां ।
तरत सब जिव लग गुरु चरना ॥ ५ ॥
शब्द ने घट घट डाली धूम ।
सुरत लगी चढ़ने इत से घूम ॥ ६ ॥
देखती घट में बिमल बहार ।
डारती तन मन गुरु पर वार ॥ ७ ॥
रहें सब राधास्वामी के गुन गाय ।
सुरत से राधास्वामी नाम जपाय ॥ ८ ॥

अमल रस परमारथ पीते।
गुरू बल मन इंद्री जीते ॥ ९ ॥
मेहर राधास्वामी करी बनाय।
दिया सब हंसन पार लगाय ॥१०॥

॥ शब्द २० ॥

सरन गुरु सतसंग जिन लीनी।
हुए मन सुरत चरन लीनी ॥ १ ॥
कहें सब महिमां सतसंग गाय।
भेद निज वहां का कोइ नहिं पाय ॥२॥
संत की महिमां जहां होई।
भेद निज घर का कहें सोई ॥ ३ ॥
शब्द का मारग जो गावें।
सुरत का रस्ता बतलावें ॥ ४ ॥
प्रेम गुरु देवें हिये दृढ़ाय।
सरन गुरु महिमां कहें सुनाय ॥ ५ ॥
सोई सतसंग सच्चा जानो।
जीव का कारज वहां मानो ॥ ६ ॥

मेहर से सतसंग अस मिलिया ।
सुरत मन गुरु चरनन रलिया ॥ ७ ॥
सराहूं भाग अपना दम दम ।
नाम गुरु जपत रहूं हरदम ॥ ८ ॥
कहूं क्या मन मोहिं धोखा दीन ।
भोग रस इंद्री छिन छिन लीन ॥ ९ ॥
भूल कर अति दुख मैं पाया ।
किए पर अपने पछताया ॥१०॥
इसी से रहता नित मुरझाय ।
पुकारूं गुरु चरनन में जाय ॥११॥
मेहर मोपै कीजै गुरू दयाल ।
काट दो माया का जंजाल ॥१२॥
शब्द रस पीवे मन होय लीन ।
चरन में गुरु के दीन अधीन ॥१३॥
रहूं नित आरत गुरु की गाय ।
सरन राधास्वामी हिये बसाय ॥१४॥
दया से कीजै कारज पूर ।
रहूं नित चरन कंवल की धूर ॥१५॥

॥ शब्द २१ ॥

सुरत प्यारी गुरु मिल आई जाग।
बढ़त अब दिन दिन घट अनुराग ॥१॥
प्रेम का राधास्वामी दीना साज।
छोड़ दिया जग का भय और लाज ॥२॥
सुरत और शब्द मिला उपदेश।
धार रही सूरत हंसा भेस ॥ ३ ॥
कुमत अब घट से दीनी टार।
सुमत का लीना सहज बिचार ॥ ४ ॥
करत रहूं नित अभ्यास सम्हार।
निरख रही गुरु की मेहर अपार ॥ ५ ॥
अगम गत राधास्वामी की जानी।
जगत जिव क्योंकर पहिचानी ॥ ६ ॥
शब्द की कीनी घट पहिचान।
सुरत मन धुन संग सहज मिलान ॥ ७ ॥
नाम की महिमां जानी सार।
जपत रहूं राधास्वामी नाम अधार ॥८॥

संत मत बिन नहिं जीव उबार ।
नहीं कोइ पावे निज घरबार ॥ ९ ॥
अटक रहे सब जिव करमन में ।
भटक रहे अगिनत भरमन में ॥१०॥
लीक में बंध रहे अज्ञानी ।
टेक पिछलों की मन ठानी ॥११॥
बिना सतगुरू और बिन सतसंग ।
छुटे नहिं कबही माया रंग ॥१२॥
भाग मेरा धुर का जागा आय ।
मिला मैं राधास्वामी संगत जाय ॥१३॥
पाय निज भेद हुई शांती ।
दूर हुई मन की सब भ्रांती ॥१४॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता ।
बचन गुरू हिये अंतर धरता ॥१५॥
ध्यान गुरू रूप हिये में लाय ।
सुरत मन छिन छिन चरन समाय ॥१६॥
मगन रहूं हरदम मन के मांहि ।
गुरू की दृढ़ कर पकड़ी बांह ॥१७॥

मेहर राधास्वामी चाहूं नित्त ।
चरन में जोड़ूं हित से चित्त ॥१८॥
भरोसा राधास्वामी मन में राख ।
कहूं मैं जीवन से अस भाख ॥१९॥
सरन में राधास्वामी आवो धाय ।
भाग परमारथ लेव जगाय ॥२०॥
मेहर मोपै राधास्वामी कीन अपार ।
शुकर उन करता रहूं हर बार ॥२१॥
मेहर और इतनी करो बनाय ।
देव मन सूरत अधर चढ़ाय ॥२२॥
झांक तिल खिड़की जाऊं पार ।
सुनूं धुन घंटा नभ के द्वार ॥२३॥
वहां से त्रिकुटी पहुंचूं धाय ।
गरज संग ओअंग नाद सुनाय ॥२४॥
सुन्न चढ़ हंसन संग कर प्यार ।
बजाऊं किंगरी सारंग सार ॥२५॥
महासुन धाऊं सतगुरु संग
भंवर चढ़ गाऊं धुन सोहंग ॥२६॥

अमर पुर सुनूं बीन धुन सार ।
पुरुष का दरशन करूं निहार ॥२७॥
अलख और अगम का दरशन पाय ।
चरन राधास्वामी परसूं जाय ॥२८॥
करूं नित आरत प्रेम सम्हार ।
चरन राधास्वामी मोर अधार ॥२९॥

॥ शब्द २२ ॥

सुरत गत निरमल बुंद सरूप ।
सिंध तज आई भौ के कूप ॥ १ ॥
व्याल घर करती नित्त निवास ।
जगत में आय किया तन बास ॥ २ ॥
भरम रही इंद्रिन संग नौ वार ।
दुक्ख सुख भोगत मन के लार ॥ ३ ॥
देख जग जीवन हालत ज़ार ।
दया कर राधास्वामी परम उदार ॥४॥
जगत में आये धर औतार ।
हंस जीवन को लिया उबार ॥ ५ ॥

भक्ति गुरु रीती समझाई ।
काल मत भेद भिन्न गाई ॥ ६ ॥
सुरत और शब्द किया उपदेश ।
सुनाई महिमां संतन देश ॥ ७ ॥
बचन उन जिन हित से माना ।
दिया उन प्रेम भक्ति दाना ॥ ८ ॥
काल के फंदे दिये खुलाय ।
जाल माया का दिया कटाय ॥ ९ ॥
पुर्ष का दामन दिया पकड़ाय ।
शब्द से पौड़ी शब्द चढ़ाय ॥१०॥
सुरत मन अस अस अधर चढ़ाय ।
मेहर कर दिया निज घर पहुंचाय ॥११॥
प्रेम की मुझ को देकर दात ।
कराई भक्ती दिन और रात ॥१२॥
सिखाई नई नई भक्ती रीत ।
धरी मेरे हिरदे दृढ़ परतीत ॥१३॥
धूम गुरु भक्ती हुई भारी ।
जगत जिव कोटिन लिए तारी ॥१४॥

बढ़ावत दिन दिन अचरज भाग ।
बसाया हिये में बिरह अनुराग ॥१५॥
सुरत मन चढ़त अधर की गैल ।
मगन होय करते घट में सैल ॥१६॥
फोड़ नभ त्रिकुटी को धावत ।
निरख गुरु मूरत हरखावत ॥१७॥
मानसर किये अश्नान सम्हार ।
भंवर चढ़ खोली खिड़की पार ॥१८॥
चौक लख दरस पुरुष का कीन ।
सुनी वहां मधुर मधुर धुन बीन ॥१९॥
अलख और अगम दया धारी ।
अनामी धाम लखा सारी ॥२०॥
यहीं से उतरी सूरत धार ।
उलट फिर आई चरन सम्हार ॥२१॥
अनेक बिधि जग जीवन का काज ।
संवारा देकर भक्ती साज ॥२२॥
किया यह राधास्वामी आपहि काम ।
मेहर से दिया चरनन बिसराम ॥२३॥

गाऊं कस राधास्वामी गत भारी।
कहत रही रचना थक सारी ॥२४॥
करूं उन आरत हित धर चित्त।
चरन में राधास्वामी खेलूं नित्त ॥२५॥

॥ शब्द २३ ॥

जगत में घेरा डाला काल।
बिछाया माया ने जंजाल ॥ १ ॥
जीव सब फंस रहे भोगन में।
बिकल हुए सोग और रोगन में ॥ २ ॥
करम और धरम का कीन पसार।
पूज रहे देबी देवा झाड़ ॥ ३ ॥
संत मत भेद नहीं पाया।
काल मत सब जिव भरमाया ॥ ४ ॥
भेख और पंडित रहे अजान।
जगत में माया संग भुलान ॥ ५ ॥
कोई दिन मैं भी रहा भरमाय।
देव किरतम की पूजा लाय ॥६ ॥

सुनी जब संत मते की बात ।
हरखिया मन और फड़का गात ॥ ७ ॥
धाय कर सतसंग में आया ।
मगन हुआ गुरु दरशन पाया ॥ ८ ॥
बचन सुन मन निश्चल हूआ ।
ध्यान धर चित निरमल हूआ ॥ ९ ॥
सुरत और शब्द जुगत को पाय ।
प्रेम अंग नित अभ्यास कराय ॥१०॥
शब्द रस घट में पियत रहूं ।
दरस गुरु निरखत जियत रहूं ॥११॥
संत मत सब से बढ़ जाना ।
और मत मग में अटकाना ॥१२॥
मेरे मन हूआ अस बिस्वास ।
संत बिन कोइ नहिं पुजवे आस ॥१३॥
कहूं मैं सब से यही पुकार ।
चरन राधास्वामी धारो प्यार ॥१४॥
संत मत धारो हिये परतीत ।
चरन में गुरु के लाओ प्रीत ॥१५॥

सुरत और शब्द कमावो कार ।
होय तब तुम्हरा जीव उबार ॥१६॥
नहीं तो पड़े रहो नौवार ।
काल की फिर फिर खावो मार ॥१७॥
सराहूं छिन छिन अपना भाग ।
गुरू मोहिं दीना अचल सुहाग ॥१८॥
नीच मन जग में रहा भरमाय ।
गुरू मोहिं लिया अपनी सरनाय ॥१९॥
गुरू की गत मत मैं नहिं जान ।
दरस दे खैंच लिये मन प्रान ॥२०॥
जगत का नहिं भावे अब ढंग ।
लगा अब फीका माया रंग ॥२१॥
पिरेमी जन संग लागा नेह ।
टूट गया जग जिव संग सनेह ॥२२॥
गुरू संगत में नित खेलूं ।
पिरेमी जन संग मन मेलूं ॥२३॥
दरस गुरु छिन छिन बढ़ता चाव ।
चरन में निस दिन बढ़ता भाव ॥२४॥

गुरू बल नभ में पहुंचूं आज ।
गगन चढ़ सुनूं नाम की गाज ॥२५॥
सुन्न चढ़ भंवर गुफा को धाय ।
लोक सत अलख अगम दरसाय ॥२६॥
चरन राधास्वामी सेव रहूं ।
उमंग अंग दृढ़ कर सरन गहूं ॥२७॥

॥ शब्द २४ ॥

सुरत रंगीली सतगुरु प्यारी ।
लाई आरती धार ॥ १ ॥
भूषन बस्तर अनेक लाय कर ।
कीन्हा गुरु सिंगार ॥ २ ॥
अचरज रूपी सोभा बाढ़ी ।
उमंगा हिये अति प्यार ॥ ३ ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आए ।
देखें बिमल बहार ॥ ४ ॥
हरख हरख सब नाचें गावें ।
बाढ़ी उमंग अपार ॥ ५ ॥

राधास्वामी दया दृष्ट अब कीनी।
मगन हुए नर नार ॥ ६ ॥
सीत प्रसाद की बरखा कीनी।
पावत सब मिल झाड़ ॥ ७ ॥
अनहद बाजे गाजन लागे।
बरसत अमृत धार ॥ ८ ॥
भींजत मन सीझत सुत प्यारी।
गावत गुरु गुन सार ॥ ९ ॥
चढ़त अधर पहुंची दस द्वारे।
मानसरोवर मैल उतार ॥१०॥
परे जाय मुरली धुन पाई।
सतपुर दरशन पुर्ष निहार ॥११॥
अलख अगम की सुन सुन बतियां।
होय गई अब सब से न्यार ॥१२॥
राधास्वामी रूप निरख हिये नैना।
मगन हुई अब सूरत नार ॥१३॥
हैरत हैरत हैरत धामा।
अचरज अचरज सोभा धार ॥१४॥

होय निचिंत चरन गह बैठी ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥१५॥

॥ शब्द २५ ॥

सुरत प्यारी चित धर अगम बिबेक ।
प्रेम अंग राधास्वामी धारी टेक ॥ १ ॥
जगत का देख सकल ब्योहार ।
डार दई चित से समझ असार ॥ २ ॥
परख कर मन की चाल अनेक ।
कामना जग की डारी छेक ॥ ३ ॥
निरख कर इंद्रियन चाल कुचाल ।
जुगत से छिन छिन राख सम्हाल ॥४॥
चरन गुरु छिन छिन चित्त लगाय ।
रूप गुरु पल पल हिये बसाय ॥ ५ ॥
होत अस दिन दिन निरमल अंग ।
चरन गुरु बाढ़त प्रेम सुरंग ॥ ६ ॥
दया गुरु काटे सकल कुरंग ।
गावती गुरु गुन उमंग उमंग ॥ ७ ॥

उमंग कर करती गुरु सिंगार ।
हरखती अचरज रूप निहार ॥ ८ ॥
देख गुरु लीला अजब बहार ।
चरन गुरु चित में बढ़ता प्यार ॥ ९ ॥
अजब गत गुरु की कर पहिचान ।
शब्द गुरु हिये में धरती ध्यान ॥१०॥
उलट मन इंद्री घट में लाग ।
शब्द धुन सुनती सहित अनुराग ॥११॥
निरखती नभ चढ़ जोत अकार ।
गगन में गुरु मूरत उजियार ॥१२॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय ।
गुफा धुन मुरली सुनी बनाय ॥१३॥
अमरपुर दरस पुरुष का लीन ।
अधर चढ़ अलख अगम गत चीन ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय ।
दरस कर लीना भाग जगाय ॥१५॥
दीन अंग आरत चरनन लाय ।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥१६॥

दया कर लीना अंग लगाय।
दिया मेरा सब बिध काज बनाय ॥१७॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु परशाद प्रीत अब जागी।
उमंग उमंग सुर्त चरनन लागी ॥ १ ॥
मन हुआ मगन पाय गुरु दरशन।
तन मन धन कीन्हा गुरु अरपन ॥२॥
गुरु का रूप अधिक मन भाता।
कर सिंगार हिये हुलसाता ॥ ३ ॥
निस दिन गुरु संग करत बिलासा।
लीला देखत बढ़त हुलासा ॥ ४ ॥
आरत नई बिध लीन सजाई।
मन सूरत गुरु प्रेम रंगाई ॥ ५ ॥
सतसंगियन संग गावत आरत।
प्रीत प्रतीत हिये बिच धारत ॥ ६ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला।
हुए प्रसन्न और किया निहाला ॥७॥

॥ शब्द २७ ॥

प्रीत नवीन हिये अब जागी।
गुरु चरनन में सूरत लागी ॥ १ ॥
सतसंग करत मगन हुआ मन में।
फूला नाहिं समावत तन में ॥ २ ॥
संत मते की महिमां जानी।
राधास्वामी गत अति अगम बखानी ॥ ३ ॥
दया मेहर का लीना आसर।
राधास्वामी जपूं नाम निस बासर ॥ ४ ॥
भजन करत हिये बढ़त उमंगा।
सरन धार भौ पार उलंघा ॥ ५ ॥
दरशन करत बढ़त नित प्यारा।
बचन सुनत हिये होत उजारा ॥ ६ ॥
जग ब्योहार लगत अति रूखा।
मन इंद्री मानो तन में सूखा ॥ ७ ॥
भोगन की आसा तज दीनी।
मन हुआ गुरु चरनन में लीनी ॥ ८ ॥

गुरु बिस्वास हिये में छाया ।
थक रहे काल करम और माया ॥९॥
भरम उड़ाय हुआ मन निरमल ।
गुरु चरनन में चित हुआ निश्चल ॥१०॥
राधास्वामी चरन बसे अब हिये में ।
प्रीत प्रतीत बढ़ी अब जिये में ॥११॥
आस भरोस धरा गुरु चरना ।
सुरत शब्द में निस दिन भरना ॥१२॥
घट में सुनता अनहद घोर ।
काम क्रोध का घट गया ज़ोर ॥१३॥
घंटा संख सुनी धुन नभ में ।
गुरु सरूप निरखा गगना में ॥१४॥
सुन में निरखा चंद्र उजारा ।
सुनी भंवर धुन सोहंग सारा ॥१५॥
सतपुर लखा पुरुष का रूप ।
तिस परे अलख अगम कुल भूप ॥१६॥
वहां से आगे सुरत चढ़ाई ।
निरखा राधास्वामी धाम सुहाई ॥१७॥

उमंग उठी हिये में अति भारी ।
गुरु चरनन में आरत धारी ॥१८॥
प्रेम प्रीत से सामां लाया ।
माता संग गुरु सन्मुख आया ॥१९॥
परम गुरू राधास्वामी प्यारे ।
सब रचना के प्रान अधारे ॥२०॥
हुए परसन्न मेहर की भारी ।
मो से अधम को लिया उबारी ॥२१॥

॥ शब्द २८ ॥

परम गुरू राधास्वामी दातारे ।
वही मेरे जिय के आधारे ॥ १ ॥
गाऊं कस उन महिमा भारी ।
करी मोपै मेहर दया न्यारी ॥ २ ॥
सुरत मन चरनन खैंच लगाय ।
लिया मोहिं किरपा कर अपनाय ॥ ३ ॥
धरी मेरे हिये में दृढ़ परतीत ।
दई चरनन में गहिरी प्रीत ॥ ४ ॥

शब्द की ग़त मत अगम अपार ।
लखाई घट में किरपा धार ॥ ५ ॥
दिखा कर मन के सभी बिकार ।
दया कर देते सहज निकार ॥ ६ ॥
जगत के भोग सभी दिखलाय ।
भाव उन चित से दिया हटाय ॥ ७ ॥
पकड़ मेरी ढीली कर तन मन ।
कराये गुरु चरनन अरपन ॥ ८ ॥
दया मोपै अंतर जस कीनी ।
परख मोहिं वाकी वहीं दीनी ॥ ९ ॥
घात माया ने की बहु भांत ।
निरख दे वोहीं बख़्शी शांत ॥१०॥
कहूं क्या अस अस मेहर कराय ।
राह मेरी राधास्वामी दीन चलाय ॥११॥
शुकर उन क्योंकर गाऊं मैं ।
चरन उन छिन छिन ध्याऊं मैं ॥१२॥
ग़ौर कर देखा जग का हाल ।
रहे फंस सब जिव माया जाल ॥१३॥

करम का नित्त बढ़ाते भार ।
काल की खाते निस दिन मार ॥१४॥
सोचते कुछ नहिं लाभ और हान ।
रहे सब माया संग भरमान ॥१५॥
सुनें नहिं चित दे सतगुरु बात ।
कहो कस यह परमारथ पात ॥१६॥
संग इन जीवन नहिं चाहूं ।
सरन में राधास्वामी के धाऊं ॥१७॥
भाग मेरा जागा अजब निदान ।
मिला मोहिं सतगुरु चरन ठिकान ॥१८॥
जिऊं मैं नित गुरु शब्द सम्हार ।
पिऊं मैं चरन अमीरस सार ॥१९॥
मगन रहूं राधास्वामी के गुन गाय ।
चरन में छिन छिन सुरत समाय ॥२०॥
दयानिधि राधास्वामी गुरु प्यारे ।
मेहर कर लीना मोहिं तारे ॥२१॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु चरन पकड़ दृढ़ प्यारे ।
क्यों जम हाट बिकाय ॥ १ ॥
करम धरम में सब जिव अटके ।
गुरु संग हेत न कोई लाय ॥ २ ॥
भाग हीन सब पड़े काल बस ।
गुरु दयाल की सरन न आय ॥ ३ ॥
जिन पर मेहर करें राधास्वामी ।
उन हिरदे यह बचन समाय ॥ ४ ॥
गुरु चरनन की क्या कहूं महिमा ।
बिरले प्रेमी ध्यावत ताय ॥ ५ ॥
भाव भक्ति कोइ क्या दिखलावे ।
निज कर रहे चरन लिपटाय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप निरख हिये अंतर ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ७ ॥
ऐसी सुरत पिरेमी जाकी ।
तिन गुरु मेहर मिली अधिकाय ॥ ८ ॥

जोगी ज्ञानी और बैरागी।
यह सब भूठे ठौर न पाय ॥ ९ ॥
बड़ा भाग उन प्रेमी जागा।
जिन को लिया गुरु गोद बिठाय ॥१०॥
राधास्वामी चरन धार हिये अंतर।
यह आरत अनुरागी गाय ॥११॥

॥ शब्द ३० ॥

खोजी सुनो सत्त की बात ॥ टेक ॥
सतसंग करो चित्त दे गुरु का।
और बचन उन हिये समात ॥ १ ॥
भेद भाव जब गुरू सुनावें।
सुन सुन मन चरनन उमगात ॥ २ ॥
जस लोभी को दाम पियारा।
अस खोजी को गुरु की बात ॥ ३ ॥
सोवत जागत याद न बिसरत।
गुरु दरशन को मन अकुलात ॥ ४ ॥

दरद उठे छिन छिन हिये माहीं।
नित्त बढ़े परमारथ चाट ॥ ५ ॥
ऐसी लगन लाय जो खोजी।
सो सतगुरू से पावे दात ॥ ६ ॥
जब लग लगन न होवे सांची।
हिरसी कपटी जानो जात ॥ ७ ॥
माया चेरा गुरू का नाहीं।
सो कस प्रेम की दौलत पात ॥ ८ ॥
काल करम के धक्के खावे।
जम खूंदे नित धर धर लात ॥ ९ ॥
जगत मोह तज सांचे मन से।
अब राधास्वामी का कर तू साथ ॥१०॥

॥ शब्द ३१ ॥

संत किया सतसंग जगत में।
निज घर भेद सुनाये ॥ १ ॥
जिन २ धारा बचन प्रेम से।
तिन पर दया कराये ॥ २ ॥

ले उपदेश उन जुगत कमाई।
अंतर ध्यान धराये ॥ ३ ॥
गुरु का रूप बसा अब घट में।
दरशन कर मगनाये ॥ ४ ॥
बिन गुरु चरन बिकल मन रहता।
दम दम तार लगाये ॥ ५ ॥
जब गुरु परचा देयं मेहर से।
फूलत तन न समाये ॥ ६ ॥
ऐसी लगन लगी जिन हिये में।
सो गुरु चरन समाये ॥ ७ ॥
उमंग उमंग गुरु दरशन लागी।
जग और देह बिसराये ॥ ८ ॥
नित्त बिलास करे अब घट में।
धुन झनकार सुनाये ॥ ९ ॥
अस गुरु रूप ध्यान धरा जिन जिन।
तिन घट पाट खुलाये ॥१०॥
मीन मगन रहे जस जल माहीं।
अस सुन शब्द समाये ॥११॥

मन से छूट सुरत हुई निरमल।
तब सत शब्द लगाये ॥१२॥
सत्तपुरुष का दरशन पाकर।
अलख अगम दरसाये ॥१३॥
भर भर प्रेम आरती गावत।
राधास्वामी सन्मुख आये ॥१४॥
पूरन मेहर करी राधास्वामी।
पूरा काज बनाये ॥१५॥
मगन होय स्रुत चरनन लागी।
अब कुछ कहा न जाये ॥१६॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं पाया दरस गुरू का।
मैं परसा चरन गुरू का ॥ १ ॥
मैं ध्याऊं रूप गुरू का।
मैं गाऊं नाम गुरू का ॥ २ ॥
मैं सेऊं चरन गुरू का।
मैं दासन दास गुरू का ॥ ३ ॥

मेरे हिये बसा शब्द गुरू का ।

मैं धारा रंग गुरू का ॥ ४ ॥

मैं जग तज हुआ गुरू का ।

मैं सचमुच हुआ गुरू का ॥ ५ ॥

मोपै हो गया करम[1] गुरू का ।

मोहिं बख़्शा प्रेम गुरू का ॥ ६ ॥

मैं पकड़ा संग गुरू का ।

मैं धारा ढंग गुरू का ॥ ७ ॥

प्यारे राधास्वामी नाम गुरू का ।

सब के परे धाम गुरू का ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

बचन सुन बढ़ा हिये अनुराग ।

पिरेमी सुरत उठी अब जाग ॥ १ ॥

दरस गुरु पियत अमीं रस सार ।

निरख छबि तन मन सुद्ध बिसार ॥ २ ॥

गाय रही गुरु महिमां छिन छिन ।

नाम गुरु जपत रही निस दिन ॥ ३ ॥

(१) करम = बख़्शिश

बढ़ावत नित चरनन में प्यार ।
रूप गुरु धारत हिये मंझार ॥ ४ ॥
सुरत और शब्द का ले अभ्यास ।
निरख रही घट में नित्त बिलास ॥ ५ ॥
जगावत नित गुरु प्रीत नवीन ।
मगन रहे गुरु संग ज्यों जल मीन ॥ ६ ॥
धावती सेवा को हर बार ।
देह की सुध बुध रही बिसार ॥ ७ ॥
उमंग रही मन अंतर में छाय ।
प्रेम गुरु हियरे रहा बसाय ॥ ८ ॥
जगत का ख्याल नहीं मन लाय ।
कुटम्ब की याद न चित्त समाय ॥ ९ ॥
बासना भोगन की दई त्याग ।
बढ़ा गुरु आरत का अनुराग ॥ १० ॥
गाऊं राधास्वामी आरत सार ।
जिऊं मैं राधास्वामी नाम अधार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

संत मत भेद सुना जबही ।
खिले मेरे मन बुद्धी तबही ॥ १ ॥
शब्द की महिमां गुरु गाई ।
भेद रचना का समझाई ॥ २ ॥
सुरत का बंधन तन मन संग ।
हुआ कस अब कस होय असंग ॥ ३ ॥
जुगत सुन मन निश्चय धारा ।
गुरू को परखा सच यारा ॥ ४ ॥
करत मन सतसंग हुआ सरशार ।
चरन में राधास्वामी जागा प्यार ॥ ५ ॥
हुआ कम मन से जग का भाव ।
जगा अब परमारथ का चाव ॥ ६ ॥
भक्त जन दीखें सुखियारे ।
जगत जिव सबही दुखियारे ॥ ७ ॥
नित्त गुरु दरशन चाहत मन ।
करत गुरु सेवा फड़कत तन ॥ ८ ॥

उमंग मन लई गुरु शिक्षा सार ।
करूं मैं नित अभ्यास सम्हार ॥ ९ ॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयार ।
लिया मोहिं जग से आज उबार ॥१०॥
भाव संग आरत उन गाऊं ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊं ॥११॥

॥ शब्द ३५ ॥

अनेक मत जग में फैल रहे ।
टेक सब पिछली धार रहे ॥ १ ॥
ख़बर नहिं को है सच करतार ।
कहां है जिव का निज घरबार ॥ २ ॥
कौन बिधि जग बंधन टूटे ।
कौन बिधि दुख सुख से छूटे ॥ ३ ॥
अमर सुख कस और कहां पावे ।
कौन जुगती कर वहां जावे ॥ ४ ॥
तपत रहा संसय में दिन रात ।
किसी ने कही न सांची बात ॥ ५ ॥

भाग से गुरु संगत में आय ।
तपन मेरी सबही गई बुझाय ॥ ६ ॥
भेद सच्च मालिक का पाया ।
सुरत का निज घर बतलाया ॥ ७ ॥
शब्द का मारग दरसाया ।
जतन बिधिपूर्वक समझाया ॥ ८ ॥
प्रीत मेरे हिये में दई जगाय ।
मोह जग काटन जुगत बताय ॥ ९ ॥
दया का बल हिरदे में धार ।
करूं मैं नित अभ्यास सम्हार ॥१०॥
गुरू बल मोह जगत का टार ।
बढ़ाऊं चरनन में नित प्यार ॥११॥
सरन में राधास्वामी आया धाय ।
करूं उन आरत साज सजाय ॥१२॥
मेहर का दीजे मोहिं परसाद ।
रहूं तुम चरनन में दिल शाद ॥१३॥
नाम राधास्वामी सुमिर रहूं ।
चरन राधास्वामी पकड़ रहूं ॥१४॥

॥ शब्द ३६ ॥

कुंवर प्यारा आरत लाया साज ।
हुए राधास्वामी परसन आज ॥ १ ॥
उमंग से करता गुरु सिंगार ।
हिये में धरता चरनन प्यार ॥ २ ॥
गावता आरत प्रीत सहित ।
दया राधास्वामी छिन छिन चहित ॥ ३ ॥
दरस गुरु करता दृष्टी जोड़ ।
बिसारत जग का मोर और तोर ॥ ४ ॥
सुरत मन सिमटावत हर दम ।
गगन चढ़ सुनता धुन घमघम ॥ ५ ॥
गावता गुरु महिमां हर बार ।
चरन राधास्वामी का आधार ॥ ६ ॥
मेहर से दीना गुरु परशाद ।
कटी मेरी जन्म जन्म की ब्याध ॥ ७ ॥
जगत का दीना भाव निकार ।
नाम राधास्वामी पाया सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

सुरत दृढ़ कर गुरु सरन गही ।
आरती गावत आज नई ॥ १ ॥

चरन गुरु धारी गहिरी प्रीत ।
बसाई हिये में दृढ़ परतीत ॥ २ ॥

मगन होय खेलत गुरु के पास ।
करत नित चरनन संग बिलास ॥ ३ ॥

करत गुरु आरत उमंग उमंग ।
सखी सब गावें नाचें संग ॥ ४ ॥

समां यह अचरज रूप बंधाय ।
कौन कहे सोभा गुरु की गाय ॥ ५ ॥

आरती अद्भुत अब साजी ।
हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी ॥ ६ ॥

मेहर से दिया सतगुरु परशाद ।
रहूं उन चरनन में दिलशाद ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

मगन हुई सुरत दरस गुरु पाय ।
सरन गह रही चरन लिपटाय ॥ १ ॥
कहूं क्या सुख गुरु संग भारी ।
पियत रही सुरत अमीं सारी ॥ २ ॥
बचन की बरखा होती नित्त ।
भींज रहे गुरु रंग मन और सुर्त ॥ ३ ॥
करत गुरु सेवा उमंग उमंग ।
हरख संग फूल रहा अंग अंग ॥ ४ ॥
सुनत नित महिमां सत गुरु देस ।
त्याग दिया करम भरम का लेस ॥ ५ ॥
शब्द का मारग पाया सार ।
नेम से करूं अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥
ध्यान गुरु रूप हिये में लाय ।
रहूं मैं छिन छिन प्रेम जगाय ॥ ७ ॥
नाम गुरु जपत रहूं हर दम ।
चरन में राखूं चित कर सम ॥ ८ ॥

चरन गुरु हुई अब दृढ़ परतीत ।
दया से बढ़ती निस दिन प्रीत ॥ ९ ॥
प्रीत की ले कर में थाली ।
बिरह की जोत लई बाली ॥१०॥
आरती राधास्वामी की गाऊं ।
रूप राधास्वामी नित ध्याऊं ॥११॥

॥ शब्द ३९ ॥

आरत आगे राधास्वामी गाऊं ।
हिये में प्रेम नवीन जगाऊं ॥ १ ॥
उमंग उमंग कर सन्मुख आऊं ।
चित चरनन में जोड़ धराऊं ॥ २ ॥
भटक भटक बहु भटका जग में ।
मेहर हुई आया चरनन में ॥ ३ ॥
भेद दिया गुरु धुर पद सारा ।
सुरत शब्द मारग में धारा ॥ ४ ॥
अनेक बिधी गुरु दई बताई ।
मन और सूरत चरन लगाई ॥ ५ ॥

उमंग सहित कीना अभ्यास ।
घट मे पाया परम बिलास ॥ ६ ॥
बहु बिधि कर मैं निश्चय धारा ।
राधास्वामी मत है सब का सारा ॥ ७ ॥
जीव उबार इसी से होई ।
राधास्वामी बिन सब गये बिगोई ॥ ८ ॥
जो जो राधास्वामी नाम सम्हारे ।
सहजहि जाय भौसागर पारे ॥ ९ ॥
जप तप संजम तीरथ कीना ।
ज्ञान जोग बिधि सब हम चीन्हा ॥१०॥
और अनेक जतन किये भाई ।
ख़ाली रहा कुछ हाथ न आई ॥११॥
जब राधास्वामी संगत में आया ।
निज पद का सत मारग पाया ॥१२॥
सरन लई राधास्वामी संता ।
निरभय हुआ मिटी सब चिन्ता ॥१३॥
मगन रहूं गुरु चरन धिआऊं ।
सुरत शब्द में सहज लगाऊं ॥१४॥

गुन गाऊं राधास्वामी प्यारे ।
दया करी मोहिं लिया उबारे ॥१५॥

॥ शब्द ४० ॥

बाल समान चरन गुरु आई ।
देख दरस अति कर हरखाई ॥ १ ॥
खेलूं गुरु सन्मुख धर प्यार ।
सुनत रहूं गुरु बानी सार ॥ २ ॥
आरत धारूं उमंग प्रेम से ।
जपत रहूं गुरु नाम नेम से ॥ ३ ॥
गुरु की लीला निरख निहार ।
बिगसत मन और बढ़त पियार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीना भक्ति साज ।
चरन सरन हिये धारी आज ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

आरती गाऊं रंग भरी ।
सुरत गुरु चरनन तान धरी ॥ १ ॥

लगाये मन ने बहु अटकाव ।
करम ने दीने बहु भरमाव ॥ २ ॥
दीन लख गुरू दया धारी ।
करम और भरम दिये टारी ॥ ३ ॥
हुआ मन बहु बिधि कर अब तंग ।
चढ़ाया गुरु ने अपना रंग ॥ ४ ॥
भोग तज घट में लाग रही ।
शब्द धुन सुन सुन जाग रही ॥ ५ ॥
जगत का झूठ लगा ब्योहार ।
लगा अब फीका सब संसार ॥ ६ ॥
उमंग अस उठती बारम्बार ।
करूं दृढ़ भक्ती गुरु दरबार ॥ ७ ॥
चरन में निज कर सुरत लगाय ।
अमींरस पीऊं प्रेम जगाय ॥ ८ ॥
दया गुरु चढ़ूं आज गगना ।
दरस गुरु दृष्ट जोड़ तकना ॥ ९ ॥
सुन्न चढ़ महासुन्न धस पार ।
भंवर में सुनूं सोहंग धुन सार ॥१०॥

सत्तपुर अलख अगम के पार।
रहूं राधास्वामी दरस निहार ॥११॥
आरती प्रेम सहित रहूं गाय।
दया प्यारे राधास्वामी करी बनाय ॥१२॥

॥ शब्द ४२ ॥

दीन दिल हिये अनुराग सम्हार।
दास करे आरत साज संवार ॥ १ ॥
हिये का थाल सजाऊं आज।
बिरह की जोत जगाऊं साज ॥ २ ॥
गाऊं गुरु आरत उमंग सम्हार।
दरस गुरु निरखूं नैन निहार ॥ ३ ॥
दृष्ट घट उलटूं नैन झुमाय।
सुरत की ताड़ी धुन संग लाय ॥ ४ ॥
मेहर की दृष्टी गुरु की पाय।
सुरत मन नभ में पहुंचे धाय ॥ ५ ॥
काल अंग मन से दिया निकार।
भाव भय जग का दीना टार ॥ ६ ॥

प्रेम की गुरू ने की बरखा ।
मिटी मन सूरत की तिरखा ॥ ७ ॥
शब्द धुन बाज रही घनघोर ।
संख और घंटा डाला शोर ॥ ८ ॥
निरख रही सूरत जोत उजार ।
गुरू गुन गावत बारम्बार ॥ ९ ॥
हिये में बढ़ता अब अनुराग ।
सुरत रही शब्द गुरू से लाग ॥१०॥
गगन चढ़ सुनती धुन ओंकार ।
लाल रंग देखा सूर अकार ॥११॥
दसम दर खोला पाट हटाय ।
बिमल हुई मानसरोवर न्हाय ॥१२॥
महासुन गई गुरू संग दौड़ ।
भंवर चढ़ मिटी रैन हुआ भोर ॥१३॥
बीन धुन सुन कर गई सतलोक ।
अलख और अगम का पाया जोग ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार ।
अभय होय बैठी सरन सम्हार ॥१५॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरत मेरी गुरु चरनन अटकी ।
जगत से छिन छिन अब झटकी ॥ १ ॥
बहुत दिन माया संग भटकी ।
प्रीत गुरु अब हिये में खटकी ॥ २ ॥
करम और धरम दिये पटकी ।
पकड़ धुन सुरत गगन सटकी ॥ ३ ॥
उलट मन कला खाय नट की ।
चांदनी घट अंतर छिटकी ॥ ४ ॥
ख़बर लई जाय दसम पट की ।
सुरत अक्षर धुन संग लटकी ॥ ५ ॥
संत बिन को कहे या बट की ।
भंवर धुन सुन सूरत चटकी ॥ ६ ॥
परे चढ़ सुनी धुन्न सत की ।
सुरत वहां मगन होय मटकी ॥ ७ ॥
बेद क्या जाने सत मत की ।
ख़बर वह देता खट पट की ॥ ८ ॥

दया मोपै राधास्वामी झटपट की ।
सुरत चरनन में चटपट ली ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

मान तज चरनन आन पड़ी ।
सुरत करे आरत उमंग भरी ॥ १ ॥
दीन दिल लीना थाल सजाय ।
प्रेम गुरु चरनन जोत जगाय ॥ २ ॥
गुरू का सन्मुख कर दीदार ।
हुआ मन मगन हिये धर प्यार ॥ ३ ॥
तान कर दृष्टी तिल में जोड़ ।
सुनत रही अनहद धुन घनघोर ॥ ४ ॥
बिरह हिये राधास्वामी चरन जगाय ।
सुरत मन उमंग अधर को धाय ॥ ५ ॥
अबल मन राधास्वामी सरन सम्हार ।
दया गुरु मांगत बारम्बार ॥ ६ ॥
मेहर बिन कस घट में चाले ।
बिघन बहु माया ने डाले ॥ ७ ॥

काल ने लीना मारग घेर ।
मोह जग डाला भारी फेर ॥ ८ ॥
काम और क्रोध रहे भरमाय ।
अनेक बिधि माया संग भुलाय ॥ ९ ॥
गुरू बिन कौन हटावे काल ।
दया कर वेही काटें जाल ॥१०॥
सुरत मन घट में होय निसंक ।
चढ़ें तब उमंग २ धुन संग ॥११॥
फोड़ तिल सुनें शब्द की गाज ।
सहसदल कंवल में देख समाज ॥१२॥
परे चढ़ निरखें गुरु लीला ।
सुन्न चढ़ होवे चित सीला ॥१३॥
भंवर धुन सुन कर हुई मगन ।
सत्तपुर किया पुरुष दरशन ॥१४॥
निरख कर अलख अगम का नूर ।
मिला राधास्वामी दरस हजूर ॥१५॥
प्रेम का मिला अजब भंडार ।
सुरत हुई हैरत संग सरशार ॥१६॥

दया राधास्वामी निरख अपार।
गाय रही महिमां उनकी सार ॥१७॥

॥ शब्द ४५ ॥

प्रेम संग आरत करत रहूं।
चरन में हित से लिपट रहूं ॥ १ ॥
गुरू का रूप बसा हिये में।
गुरू की प्रीत धसी जिये में ॥ २ ॥
सुरत से सेऊं दिन राती।
चरन गुरु नित्त रहूं राती ॥ ३ ॥
भाग से जब दरशन मिलते।
सुरत मन फड़क २ खिलते ॥ ४ ॥
देह की सुध बुध सब बिसराय।
मगन रहूं गुरु के सन्मुख आय ॥ ५ ॥
उमंग हिये माहिं नवीन जगाय।
करत गुरु सेवा भाग बढ़ाय ॥ ६ ॥
बिना गुरु और न मानूं कोय।
मौज गुरु जो कुछ होय सो होय ॥७॥

गुरू से करता यही पुकार ।
चढ़ाओ सूरत नौ के पार ॥ ८ ॥
होय तब तन मन से न्यारी ।
गगन चढ़ निरखूं उजियारी ॥ ९ ॥
दसम दर खोल अधर को धाय ।
भंवर चढ़ सतपुर पहुंचूं जाय ॥१०॥
पुरुष का अचरज रूप निहार ।
करूं फिर अलख अगम से प्यार ॥११॥
वहां से निरख अनामी धाम ।
चरन में राधास्वामी पाउं बिस्राम ॥१२॥
कोई नहिं जाने यह मत सार ।
बहे सब काल करम की धार ॥१३॥
भाग बिन नहिं पावे मत संत ।
दया बिन नहिं जावे घर अंत ॥१४॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग ।
सरन गह रहा उन चरनन लाग ॥१५॥

॥ शब्द ४६ ॥

गुरू के चरनन आन पड़ी ।
सुरत मांगे सरना मेहर भरी ॥ १ ॥
काल मोहिं दीन्हे दुख बहु भांत ।
करम संग लागी भारी सांट ॥ २ ॥
जाल बहु माया दीन बिछाय ।
अनेक बिधि मो को तंग रखाय ॥ ३ ॥
बिना राधास्वामी नहिं कोइ और ।
हटावे काल करम का ज़ोर ॥ ४ ॥
सरन गह चरनन में रहुं लाग ।
जगावें राधास्वामी मेरा भाग ॥ ५ ॥
मगन होय सुनता गुरू बचना ।
चाह जग सहज २ तजना ॥ ६ ॥
चरन में नित्त बढ़ाता प्यार ।
बिघन मन इंद्री दूर निकार ॥ ७ ॥
सुरत को नित घट में भरना ।
रूप गुरू हिरदे में धरना ॥ ८ ॥

भरोसा राधास्वामी मन में लाय ।
चरन राधास्वामी छिन २ ध्याय ॥ ९ ॥
दुःख सुख जग से नहिं डरना ।
दया ले बैरियन से लड़ना ॥१०॥
करें राधास्वामी मोर सहाय ।
करम फल सहजहि देहिं भोगाय ॥११॥
दया कर देवें घट में शांत ।
रहे नहिं मन में कोई भ्रांत ॥१२॥
लगावें मन सूरत को जोड़ ।
सुनावें घट में अनहद शोर ॥१३॥
चढ़े तब सहसकंवल दरसै ।
गगन में गुरु मूरत परसै ॥१४॥
सुन्न में मानसरोवर न्हाय ।
भंवर चढ़ मुरली बीन बजाय ॥१५॥
सत्तपुर अलख अगम के पार ।
मिला राधास्वामी का दीदार ॥१६॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ।
करी वहां आरत प्रेम जगाय ॥१७॥

॥ शब्द ४७ ॥

चरन गुरु पकड़े अब मज़बूत ।
छोड़ दई सब निसफल करतूत ॥ १ ॥
बहुत दिन माया संग लुभाय ।
जगत में जहां तहां रहा भरमाय ॥ २ ॥
भटक में हुआ मैं अति हैरान ।
न पाया सत का कहीं निशान ॥ ३ ॥
भाग से संत मते का भेद ।
मिला और हट गये मन के खेद ॥ ४ ॥
नित्त मैं करता रहूं अभ्यास ।
हरख रहूं घट में निरख बिलास ॥ ५ ॥
अजब गत राधास्वामी मत की जान ।
हुआ गुरु चरनन पर क़ुरबान ॥ ६ ॥
रहा मन धावत से अब हार ।
पियत रहा घट में धुन रस सार ॥ ७ ॥
प्रेम गुरु हिरदे माहिं जगाय ।
शब्द संग सूरत अधर चढ़ाय ॥ ८ ॥

लखूं मैं घट में जोत उजार ।
गगन में सुनता धुन ओंकार ॥ ९ ॥
सुन्न में सारंग सुनी कर प्रीत ।
अधर मुरली संग गाता गीत ॥१०॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय ।
पड़ा राधास्वामी चरनन धाय ॥११॥
मेहर राधास्वामी नित चाहूं ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊं ॥१२॥

॥ शब्द ४८ ॥

आज सजन घर बजत बधावा ।
सतगुरू मिले परम सुख देवा ॥ १ ॥
परस चरन हिया कंवल खिलाना ।
दीन होय मन सरन समाना ॥ २ ॥
प्रेम भाव हिये माहिं बसाई ।
संसय भरम अब दूर पराई ॥ ३ ॥
दरशन करत जगत सुध भूली ।
तज दई डार गही दृढ़ मूली ॥ ४ ॥

कृपा दृष्टि सतगुरु जब कीनी ।
गाजा गगन सुरत हुई लीनी ॥ ५ ॥
अमीं धार लागी अब झिरने ।
सुरत निरत घट अंतर घिरने ॥ ६ ॥
धुन झुनकार सुनत सरसाई ।
उमंग उमंग मन गगन समाई ॥ ७ ॥
सुरत छड़ी अब चढ़त अगाड़ी ।
सुन में जाय लखी फुलवारी ॥ ८ ॥
ऋतु बसंत चहुं दिस रही छाई ।
हंसन संग बिलास सुहाई ॥ ९ ॥
महासुन्न घाटी चढ़ आई ।
भंवरगुफा सोहंग धुन पाई ॥१०॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में ।
धुन बीना जहां पड़ी श्रवन में ॥११॥
कोटिन चंद्र सूर उजियारा ।
सतगुरु के इक रोम पसारा ॥१२॥
सतगुरु महिमां कही न जाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाई ॥१३॥

राधास्वामी दया भाग मेरा जागा।
तब सतगुरु के चरनन लागा ॥१४॥
चरन अधार जिऊं मैं निस दिन।
राधास्वामी २ गाऊं छिन छिन ॥१५॥
सब जीवों को कहूं पुकारी।
सतगुरु खोजो होव सुखारी ॥१६॥
तन मन धन चरनन पर वारो।
घट में गुरु का रूप निहारो ॥१७॥
राधास्वामी चरन सरन गहो भाई।
प्रेम सहित करो आरत आई ॥१८॥
राधास्वामी दया करें जब तुम पर।
करम काट पहुंचावें निज घर ॥१९॥

बचन दसवां प्रेम बिलास

भाग पहिला

नाम माला

॥ शब्द १ ॥

संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ।
आय जगत में जीव उबारे ॥ १ ॥
राधास्वामी दीना अगम संदेसा ।
जनम मरन का गया अंदेसा ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
राधास्वामी तिन को लीन उबारी ॥३॥
राधास्वामी भेद अगाध सुनाया ।
सुरत शब्द मारग दरसाया ॥ ४ ॥
राधास्वामी घट में राह लखाई ।
भेद मंज़िल का भिन २ गाई ॥ ५ ॥
दीन होय जो चरनन आई ।
राधास्वामी तिस को लिया अपनाई ॥६॥

प्रेम प्रीत नित हिये में बाढ़ी ।
राधास्वामी चरनन सूरत सांजी ॥ ७ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
राधास्वामी दई घट गैल लखाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया फोड़ तिल चाली ।
आगे निरखी जोत उजाली ॥ ९ ॥
राधास्वामी संग गई गगनापुर ।
मगन हुई लख रूप शब्द गुर ॥१०॥
वहां से भी फिर अधर चढ़ाई ।
राधास्वामी अक्षर रूप लखाई ॥११॥
महासुन्न गई राधास्वामी लार ।
सुनी भंवर धुन मुरली सार ॥१२॥
सत्तलोक गई राधास्वामी संग ।
सत्तपुरुष का धारा रंग ॥१३॥
राधास्वामी दया अलख दर्श पाई ।
वहां से अगम लोक को धाई ॥१४॥
राधास्वामी मेहर मिला धुर धाम ।
पाया राधास्वामी अचरज नाम ॥१५॥

राधास्वामी चरन किया बिसराम ।
राधास्वामी कीना पूरन काम ॥१६॥
राधास्वामी दीना अचरज ठांव ।
राधास्वामी गुन मैं कस कस गांव ॥१७॥
कहूं पुकार जगत जीवन से ।
राधास्वामी २ गाओ मन से ॥१८॥
करम धरम और भरम हटाओ ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाओ ॥१९॥
दया तुम्हार मोर मन आई ।
तासे राधास्वामी सरन जनाई ॥२०॥
राधास्वामी बिना कोई नहिं बाचे ।
दुख पावे चौरासी नाचे ॥२१॥
राधास्वामी मत है ऊंच से ऊंचा ।
और मता कोइ वहां न पहुंचा ॥२२॥
सब मत रहे रस्ते में थाके ।
राधास्वामी भेद न कोई भाखे ॥२३॥
परमातम सब कहें बखाना ।
राधास्वामी भेद न उनहूं जाना ॥२४॥

ब्रह्म और पारब्रह्म कहें गाई ।
राधास्वामी भेद न इनहूं पाई ॥२५॥
राधास्वामी भेद सबन से न्यारा ।
संत सतगुरू कहें पुकारा ॥२६॥
संत बचन को जो कोइ माने ।
राधास्वामी मत को सो सच जाने ॥२७॥
सच्चा बिरही खोजी कोई ।
राधास्वामी मत मानेगा सोई ॥२८॥
सतसंग करे समझ तब आवे ।
राधास्वामी भाव जब हिये बसावे ॥२९॥
मूरख जीव जगत के अंधे ।
राधास्वामी शब्द बिना रहें गंदे ॥३०॥
वे क्या जानें संत की गत को ।
कस समझें राधास्वामी मत को ॥३१॥
खान पान में रहे भुलाने ।
राधास्वामी महिमा नेक न जाने ॥३२॥
मरने का डर चित न समाय ।
राधास्वामी चरन भाव कस आय ॥३३॥

राधास्वामी हैं सच्चे करतार ।
यह नहिं मानें बड़े गंवार ॥३४॥
सत्त सिंध से सब जिव आये ।
राधास्वामी बिन जग में भरमाये ॥३५॥
जो चाहे सच्चा निरवार ।
राधास्वामी चरनन लावे प्यार ॥३६॥
शब्द डोर गह सुरत चढ़ावे ।
राधास्वामी चरनन बासा पावे ॥३७॥
दीन होय गुरु सरनी आवे ।
राधास्वामी दया दृष्टि तब पावे ॥३८॥
शब्द बिना नहिं होय उधार ।
बिन राधास्वामी सहे जम की मार ॥३९॥
यह सब बचन सत्त कर गाया ।
राधास्वामी सरन उबार बताया ॥४०॥
मूरख जीव न मानें बात ।
राधास्वामी सरन न चित्त समात ॥४१॥
भाग हीन बहें काल की धार ।
राधास्वामी मत नहिं मानें सार ॥४२॥

निंद्या कर सिर पाप बढ़ावें ।
राधास्वामी बिन जम धक्के खावें ॥४३॥
जब लग धुर की मेहर न होई ।
राधास्वामी मत माने नहिं कोई ॥४४॥
राधास्वामी से अब करूं पुकार ।
मेहर करो जिव लेव उबार ॥४५॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी प्रीत जगाऊं निस दिन ।
राधास्वामी रूप धियाऊं छिन छिन ॥१॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं हित से ।
राधास्वामी शब्द सुनूं मैं चित से ॥२॥
राधास्वामी संग करूं मैं मन से ।
राधास्वामी सेव करूं मैं तन से ॥ ३ ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न जानूं ।
राधास्वामी सम कोइ और न मानूं ॥४॥
राधास्वामी बिन कोइ और न आसा ।
राधास्वामी चरन चहूं नित बासा ॥५॥

राधास्वामी चरन भरोसा भारा ।
राधास्वामी सम कोइ और न प्यारा ॥६॥
राधास्वामी मेरे नैन उजारा ।
राधास्वामी बिन जग में अंधियारा ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेरे प्रान अधारा ।
राधास्वामी बिन कोइ नाहिं सहारा ॥ ८॥
राधास्वामी जग से लिया उबारी ।
राधास्वामी पर जाऊं बलिहारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कीना कारज पूर ।
राधास्वामी चरनन धारी धूर ॥१०॥
राधास्वामी पकड़ा मेरा हाथ ।
राधास्वामी का अब तजूं न साथ ॥११॥
राधास्वामी दीना धुन का भेद ।
राधास्वामी मेटे करमन खेद ॥१२॥
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ।
राधास्वामी किया भौसागर पार ॥१३॥
राधास्वामी काट दई कल फांसी ।
राधास्वामी मेट दई चौरासी ॥१४॥

राधास्वामी परम पुरुष दातार ।
राधास्वामी धरा गुरू औतार ॥१५॥
राधास्वामी कीना जीव उबार ।
राधास्वामी काटा माया जार ॥१६॥
राधास्वामी मेरा भाग जगाया ।
राधास्वामी मोहिं निज दास बनाया ॥१७॥
राधास्वामी कीनी भारी मेहर ।
राधास्वामी मेटा काल का क़हर ॥१८॥
राधास्वामी लिया बचा करमन से ।
राधास्वामी दिया हटा भरमन से ॥१९॥
राधास्वामी महिमां कस कस गाऊं ।
राधास्वामी २ सदा धियाऊं ॥२०॥
राधास्वामी चरन अधार जिऊं मैं ।
राधास्वामी अमृत सार पिऊं मैं ॥२१॥
राधास्वामी घट का परदा खोल ।
मोहिं सुनाये बचन अमोल ॥२२॥
राधास्वामी घंटा संख सुनाय ।
त्रिकुटी लाल सूर दरसाय ॥२३॥

राधास्वामी दसवां द्वार खुलाया ।
चंद्र चांदनी चौक दिखाया ॥२४॥
भंवरगुफा गई राधास्वामी संग ।
मुरली धुन जहां सुनी निसंक ॥२५॥
राधास्वामी सत्तलोक पहुंचाया ।
राधास्वामी अलख अगम परसाया ॥२६॥
राधास्वामी चरन परस हरखाई ।
राधास्वामी मेहर से निज घर पाई ॥२७॥

॥ शब्द ३ ॥

राधास्वामी नाम सम्हार ।
चित से सुर्त प्यारी ॥ १ ॥
राधास्वामी का कर आधार ।
जग से हो न्यारी ॥ २ ॥
राधास्वामी रूप निहार ।
हिये बिच धर सारी ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम पुकार ।
निस दिन कर यारी ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सम्हार ।
लाय घट में तारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी दरस निहार ।
होय घट उजियारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्रेम सिंगार ।
दिया मोहिं कर प्यारी ॥ ७ ॥
राधास्वामी पुर्ष अपार ।
मेहर कर लिया तारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी प्रान अधार ।
मिले मोहिं दया धारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कुल करतार ।
रची रचना सारी ॥१०॥
राधास्वामी पै जाऊं बलिहार ।
करी किरपा भारी ॥११॥
राधास्वामी से करले प्यार ।
तन मन धन वारी ॥१२॥
राधास्वामी कुल दातार ।
दया उन ले सारी ॥१३॥

राधास्वामी दीन दयाल ।
करें भौ से पारी ॥१४॥
राधास्वामी की महिमां सार ।
गाऊं सन्मुख ठाढ़ी ॥१५॥

॥ शब्द ४ ॥

राधास्वामी मेरे प्यारे दाता ।
उन चरनन के रहूं नित साथा ॥ १ ॥
राधास्वामी प्यारे पिता हमारे ।
उन के चरन संग रहूं सदारे ॥ २ ॥
राधास्वामी प्यारे दीन दयाला ।
राधास्वामी सब को करें निहाला ॥३॥
राधास्वामी प्यारे अगम अनामी ।
राधास्वामी गत कस जाय बखानी ॥४॥
राधास्वामी प्यारे दया करी री ।
खैंच सुरत मेरी चरन धरी री ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद सुनाया सारा ।
राधास्वामी दिया चरन में प्यारा ॥ ६ ॥

राधास्वामी लिया मोहिं खैंच बुलाई ।
सतसंग में लिया आप लगाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी खोल दई हिये आंखी ।
राधास्वामी मूरत घट में झांकी ॥ ८ ॥
राधास्वामी सेवा करूं प्रेम से ।
राधास्वामी चरन धियाऊं नेम से ॥९॥
राधास्वामी प्यारे कुल करतार ।
राधास्वामी सतगुरु परम उदार ॥१०॥
राधास्वामी दया जीव जो चावे ।
काल जाल का फंद कटावे ॥११॥
राधास्वामी जिस पर दया करें री ।
चरन ओट दे पार करें री ॥१२॥
राधास्वामी नाम गाय जो कोई ।
भेद पाय घर जावे सोई ॥१३॥
राधास्वामी दीनी तपन बुझाय ।
चरनन लग हुई सीतल आय ॥१४॥
राधास्वामी संग होय जीव उबार ।
राधास्वामी भरम निकालें झार ॥१५॥

राधास्वामी घट का पाट खुलावें ।
करम धरम सब दूर हटावें ॥१६॥
राधास्वामी धाम ऊंच से ऊंचा ।
राधास्वामी नाम सूच से सूचा ॥१७॥
राधास्वामी मात पिता पति प्यारे ।
राधास्वामी जीव और प्रान अधारे ॥१८॥
राधास्वामी देवें भक्ती साज ।
चार लोक का बख़्शें राज ॥१९॥
राधास्वामी बिन कुछ काज न सरई ।
राधास्वामी चरन चित्त अब धरई ॥२०॥
याते राधास्वामी २ गावो ।
राधास्वामी बिन कोइ और न ध्यावो ॥२१॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी गुन गाऊं मैं दम दम ।
राधास्वामी दूर करी मेरी हमहम ॥ १ ॥
राधास्वामी सा कोइ और न हमदम ।
राधास्वामी नाम जपूं मैं हर दम ॥२॥

राधास्वामी दिये निकार बिकार ।
राधास्वामी लिया मोहिं आज सुधार ॥३॥
राधास्वामी सब बिध तोड़ा मान ।
मारे ताक बचन के बान ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीना सब बल तोड़ ।
राधास्वामी लीना मन को मोड़ ॥ ५ ॥
राधास्वामी मुझ पर हुए दयाल ।
राधास्वामी लिया मोहिं आप सम्हाल ॥६॥
राधास्वामी लिया भक्ती रीत सिखाई ।
राधास्वामी घट में प्रेम जगाई ॥७॥
राधास्वामी जग से लिया छुड़ाई ।
सतसंग में मोहिं लिया मिलाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी करम धरम दिया काट ।
भरा प्रेम से मन का माट ॥ ९ ॥
राधास्वामी दीना अगम संदेस ।
सुरत शब्द का किया उपदेश ॥ १० ॥
राधास्वामी दीनी सुरत चढ़ाय ।
सहस कंवल में बैठी जाय ॥ ११ ॥

राधास्वामी बंक नाल दिखलाई।
त्रिकुटी शब्द सुनाया आई ॥ १२ ॥
राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥ १३ ॥
राधास्वामी किया महासुन पार।
सेत सूर निरखा उजियार ॥ १४ ॥
राधास्वामी सत्तलोक पहुंचाया।
सत्तपुरुष का दरशन पाया ॥ १५ ॥
राधास्वामी अलख लोक दरसाई।
अगम पुरुष का भेद जनाई ॥ १६ ॥
राधास्वामी वहां से अधर चढ़ाई।
निज चरनन में लिया मिलाई ॥ १७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

राधास्वामी दरस दिया मोहिं जब से।
राधास्वामी पर मोहित हुई तब से ॥ १ ॥
राधास्वामी भक्ति भाव मोहिं दीना।
राधास्वामी चरन सरन में लीना ॥ २ ॥

राधास्वामी घट का भेद जनाई।
धुन संग सूरत दीन लगाई ॥ ३ ॥
राधास्वामी सूरत घट में चीन।
पियत अमीरस मन हुआ लीन ॥ ४ ॥
निस दिन घट में देख बिलास।
राधास्वामी चरन हुई निज दास ॥ ५ ॥
राधास्वामी काट दिये सब भरम।
गुरु भक्ती अब हुई निज धरम ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन आसरा लीन।
पिछली टेक सबहि तज दीन ॥ ७ ॥
राधास्वामी सरन भरोसा भारी।
राधास्वामी बिन नहिं और अधारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी लिया अब मोहिं अपनाई।
अटक भटक सब दीन छुड़ाई ॥ ९ ॥
राधास्वामी सेवा करत रहूं री।
राधास्वामी मुखड़ा ताक रहूं री ॥ १० ॥
राधास्वामी सोभा निरख हरखती।
राधास्वामी दया घट माहिं परखती ॥ ११ ॥

राधास्वामी छबि पर तन मन वारूं ।
राधास्वामी चरन हिये में धारूं ॥१२॥
राधास्वामी दया सुर्त घट में चढ़ती ।
जोत रूप लख आगे बढ़ती ॥१३॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत ।
राधास्वामी दया हुइ निरमल सूरत ॥१४॥
राधास्वामी दीना घाट चढ़ाय ।
सुन में जाय मानसर न्हाय ॥१५॥
राधास्वामी महासुन्न दिखलाय ।
मुरली धुन दई गुफा सुनाय ॥१६॥
राधास्वामी मेहर सुनी धुन बीन ।
भेद अलख और अगम का चीन ॥१७॥
पूरन मेहर करी राधास्वामी ।
जाय लखा धुर धाम अनामी ॥१८॥
राधास्वामी गुन कस करूं बखान ।
राधास्वामी चरन अब मिला ठिकान ॥१९॥

॥ शब्द ७ ॥

राधास्वामी प्यारे प्रेम निधान ।
राधास्वामी प्यारे पुरुष सुजान ॥
प्रेम सहित राधास्वामी गुन गाऊं ।
हर दम राधास्वामी नाम धियाऊं ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
राधास्वामी किया मोर उपकार ।
राधास्वामी मोहिं उतारा पार ॥
राधास्वामी लें सब जीव उबार ।
जो कोइ सुमिरे नाम दयार ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
दीन होय जो सरना आवे ।
आरत कर राधास्वामी रिझावे ॥
भेद पाय मन सुरत चढ़ावे ।
राधास्वामी दया अगम गत पावे ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥

धर परतीत करे सतसंगा।
राधास्वामी नाम सुमिर चित चंगा॥
सेवा करत चढ़े नित रंगा।
राधास्वामी दया भरम सब भंगा॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ४॥
राधास्वामी बिन नहिं जीव उधार।
खुले नहीं कभी मोक्ष दुआर॥
राधास्वामी बिन पद लखे न सार।
भरमत रहे नित नौ के वार॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ५॥
याते सब जिव समझो भाई।
राधास्वामी भेद लेव घट आई॥
राधास्वामी से नित प्रीत बढ़ाई।
राधास्वामी दें सब काज बनाई॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ६॥
राधास्वामी से अब करूं पुकारा।
हे मेरे प्यारे पिता दयारा॥

मुझ निकाम को लेव सम्हारा ।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

राधास्वामी नाम जपो मेरे भाई ।
राधास्वामी नाम सुनो घट आई ॥
हर दम चरनन सुरत लगाई ।
राधास्वामी गत तब कुछ नजर आई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन हिये में धारो ।
ध्यान धरत उन रूप निहारो ॥
राधास्वामी करें तोहि जग पारो ।
राधास्वामी नाम कभी न बिसारो ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
राधास्वामी भेद नाद दरसावें ।
राधास्वामी घर की राह लखावें ॥

मंज़िल के सब नाम बतावें ।
धुन और रूप भिन्न कर गावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥
राधास्वामी पिछली टेक छुड़ावें ।
राधास्वामी करम और भरम उड़ावें ॥
राधास्वामी काल को दूर हटावें ।
करम काट जिव घर पहुंचावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मन को मोड़ धरावें ।
राधास्वामी घट में सुरत चढ़ावें ॥
श्याम कंज का पाट खुलावें ।
नभपुर जोत रूप दरसावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ५ ॥
राधास्वामी सुरत गगन पहुंचावें ।
तिरबेनी अश्नान करावें ॥
महासुन्न के पार करावें ।
भंवरगुफा मुरली सुनवावें ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥

राधास्वामी संग अमरपुर आई।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई॥
अलख अगम के पार चढ़ाई।
राधास्वामी २ दरशन पाई॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ७॥

॥ शब्द ९॥

गाओ गाओ री सखी नित राधास्वामी
ध्याओ २ री सखी नित राधास्वामी।
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ १॥
सुनो २ री सखी धुन राधास्वामी।
गुनो २ री सखी गुन राधास्वामी॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ २॥
देखो २ री सखी छबि राधास्वामी।
आओ २ री सरन सब राधास्वामी॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ३॥
परखो २ री सखी गत राधास्वामी।
मानो २ री सखी मत राधास्वामी॥

राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥
सेवो २ री सखी गुरु राधास्वामी ।
बसें २ री सखी धुर राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ५ ॥
धारो २ री सखी बल राधास्वामी ।
मिलो २ री सखी चल राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥
निरखो २ री सखी पिया राधास्वामी ।
पाओ २ री सखी दया राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

राधास्वामी महिमा कस करूं बरनन ।
राधास्वामी लिया लगा मोहिं चरनन ॥१॥
राधास्वामी काटे करम और भर्मा ।
राधास्वामी दूर किये सब भर्मा ॥ २ ॥
राधास्वामी जग से लिया निकार ।
राधास्वामी धोये सबहि बिकार ॥ ३ ॥

राधास्वामी अपनी टेक बंधाई ।
किरतम इष्ट सब दिये छुड़ाई ॥ ४ ॥
राधास्वामी दइ मोहिं प्रीत चरन में ।
राधास्वामी दइ परतीत सरन में ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद दिया निज नाम ।
राधास्वामी भक्ती दई निस्काम ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीना चरन अधार ।
राधास्वामी किया भौजल से पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी दुरमत कीनी दूर ।
राधास्वामी दिया प्रेम भरपूर ॥ ८ ॥
राधास्वामी कीनी सूरत सूर ।
बाजे घट में अनहद तूर ॥ ९ ॥
राधास्वामी निस दिन नाम जपाई ।
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाई ॥१०॥
तिल अंदर सूरत को जोड़ ।
राधास्वामी संग पहुंची नभ ओर ॥११॥
राधास्वामी जोत रूप दरसाया ।
राधास्वामी त्रिकुटी शब्द सुनाया ॥१२॥

राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥१३॥
राधास्वामी दया गुफा में जाय।
सोहंग मुरली सुनी बनाय ॥ १४ ॥
राधास्वामी दया लखा सत रूप।
सुरत धरा अब हंस सरूप ॥ १५ ॥
राधास्वामी दया अलखपुर झांका।
अगम पुरुष का दरशन ताका ॥ १६ ॥
राधास्वामी मेहर गई धुर धाम।
निरखा पूरन पुरुष अनाम ॥ १७ ॥
राधास्वामी कीना पूरन काज।
प्रेम भक्ति का पाया साज ॥ १८ ॥

॥ शब्द ११ ॥

जो सच्चा परमारथी।
तिस को यही उपाय ॥
कुल मालिक का खोज कर।
राधास्वामी संगत आय ॥ १ ॥

कुल्ल मते संसार के।
थाक रहे मग माहिं॥
राधास्वामी पद नहिं पाइया।
रहे काल की ठांहिं॥ २॥
याते सतगुरु खोज कर।
करना उन से प्रीत॥
राधास्वामी मत का भेद ले।
धर चरनन परतीत॥ ३॥
उमंग सहित अभ्यास कर।
मन और सुरत लगाय॥
राधास्वामी दया कर।
देवें शब्द सुनाय॥ ४॥
मगन होय धुन शब्द सुन।
नित्त भजन कर नेम॥
राधास्वामी मेहर से।
जागे घट में प्रेम॥ ५॥
सुरत चढ़े तब अधर में।
जोत रूप दरसाय॥

राधास्वामी मेहर से ।
त्रिकुटी शब्द सुनाय ॥ ६ ॥
सुन में देखा चांदना ।
भंवर सेत उजियार ॥
सत्त अलख और अगम लख ।
राधास्वामी रूप निहार ॥ ७ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे ।
परम गुरू दातार ॥
दया करी मुझ दास पर ।
दीना सरन अधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १२ ॥

राधास्वामी मेरे गुरू दातारे ।
राधास्वामी मेरे प्रान पियारे ॥ १ ॥
अगम रूप राधास्वामी धारा ।
राधास्वामी हुए अलख पुर्ष न्यारा ॥२॥
राधास्वामी धारा सत्त सरूप ।
सोभा उनकी अजब अनूप ॥ ३ ॥

राधास्वामी धरें सन्त अवतार ।
राधास्वामी करें जीव उद्धार ॥ ४ ॥
राधास्वामी घट का भेद सुनावें ।
सुरत शब्द मारग दरसावें ॥ ५ ॥
राधास्वामी सिक्षा जो जिव धारे ।
भौ सागर के जावे पारे ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बने निज करनी ।
सुरत शब्द में छिन २ धरनी ॥ ७ ॥
दीन होय जो सरनी आवे ।
राधास्वामी दया मेहर तब पावे ॥ ८ ॥
याते राधास्वामी चरन धियाओ ।
राधास्वामी २ निस दिन गाओ ॥ ९ ॥

॥ शब्द १३ ॥

राधास्वामी चरन लगे मोहिं प्यारे ।
राधास्वामी सरन मिला आधारे ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन सुने धर प्यार ।
मोह रही मैं देख दीदार ॥ २ ॥

राधास्वामी सेव उमंग से करती।
राधास्वामी भेद हिये में धरती ॥ ३ ॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं उमंग से।
राधास्वामी रूप धियाऊं रंग से ॥ ४ ॥
राधास्वामी भजन करूं मैं चित से।
राधास्वामी नाम जपूं मैं हित से ॥ ५ ॥
राधास्वामी २ कहत रहूं री।
राधास्वामी २ सुनत रहूं री ॥ ६ ॥
राधास्वामी पर मैं हिया जिया वारूं।
जग भय लाज सभी तज डारूं ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन लगाय लियारी।
राधास्वामी मोहिं निज भेद दियारी ॥८॥
राधास्वामी संग तपन हुई दूर।
घट में बाजे अनहद तूर ॥ ९ ॥
राधास्वामी संग हुआ मन चूर।
राधास्वामी संग सुरत हुई सूर ॥१०॥
राधास्वामी संग पाई घट शांत।
निरखी घट में धुन की क्रांत ॥११॥

राधास्वामी किया परम उपकार ।
भौ जल से दिया पार उतार ॥१३॥

॥ शब्द १४ ॥

राधास्वामी महिमां क्या कहूं भारी ।
राधास्वामी करें जीव उपकारी ॥ १ ॥
राधास्वामी खैंच लिया चरनन में ।
राधास्वामी रूप बसा नैनन में ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन मिला आलंबा ।
राधास्वामी बचन सुनत भ्रम भंगा ॥ ३ ॥
राधास्वामी भेद दिया मोहिं जबही ।
राधास्वामी पर बल गई मैं तबही ॥४॥
राधास्वामी दीनी सुरत लखाय ।
राधास्वामी दीना शब्द जगाय ॥ ५ ॥
प्रीत बढ़ी राधास्वामी चरना ।
धर परतीत गही उन सरना ॥ ६ ॥
राधास्वामी सत मत अजब निहारा ।
राधास्वामी गत अति अगम अपारा ॥७॥

राधास्वामी लिया मेरा भाग जगाय ।
राधास्वामी घट में शब्द सुनाय ॥ ८ ॥
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाय ।
तिल पट में दई जोत लखाय ॥ ९ ॥
धुन घंटा और संख सुनाय ।
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाय ॥१०॥
गरज मृदंग मचाया शोर ।
राधास्वामी दिया काल बल तोड़ ॥११॥
राधास्वामी खोला दसवां द्वार ।
सुन धुन सूरत हो गई सार ॥१२॥
राधास्वामी भंवरगुफा दिखलाय ।
सतपुर दीनी बीन सुनाय ॥१३॥
अलख अगम का नाका तोड़ ।
राधास्वामी चरन सुरत लई जोड़ ॥१४॥
मेहर करी मोपै राधास्वामी ।
परस चरन अति कर मगनानी ॥१५॥

॥ शब्द १५ ॥

राधास्वामी गत कोई नहिं जाने ।
राधास्वामी मत कैसे पहिचाने ॥ १ ॥
राधास्वामी भेद न कोई पावे ।
राधास्वामी चरन प्रीत कस लावे ॥ २ ॥
राधास्वामी मत है अति कर गहिरा ।
प्रेमी जन बिन कोइ न हेरा ॥ ३ ॥
जगत भाव में रहे भुलाई ।
राधास्वामी मत की समझ न आई ॥४॥
याते सब को कहूं बुझाई ।
राधास्वामी बिन जग में भरमाई ॥ ५ ॥
मौत खड़ी सिर ऊपर गाजे ।
राधास्वामी बिन नहिं कोई बाचे ॥६॥
रोग सोग जग में सही भारा ।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥७॥
याते चेतो समझो भाई ।
राधास्वामी सरन दौड़ कर आई ॥ ८ ॥

मान बड़ाई जग की त्याग।
राधास्वामी चरन रहो तुम लाग ॥ ९ ॥
बचन सुनो हिरदे में धारो।
छिन २ राधास्वामी नाम पुकारो ॥१०॥
जग का भय और लाज बिसारो।
राधास्वामी चरन प्रीत हिये धारो॥११॥
सुरत शब्द का मारग ताको।
मन से राधास्वामी २ भाखो ॥१२॥
राधास्वामी रूप ध्यान में लाय।
निस दिन घट में प्रेम जगाय ॥१३॥
तब होवे तुम जीव उबार।
राधास्वामी लीला देखो सार ॥१४॥
हिम्मत बांध गिरो चरनन में।
राधास्वामी दया करें छिन २ में ॥१५॥

॥ शब्द १६ ॥

राधास्वामी अगम अनाम अपारे।
उन चरनन में रहूं सदारे ॥ १ ॥

राधास्वामी माता पिता पियारे।
राधास्वामी बिन नहिं और अधारे ॥२॥
राधास्वामी संग चहूं नित बास।
राधास्वामी संग नित करूं बिलास ॥३॥
राधास्वामी खोल दई हिये आंखी।
राधास्वामी चरन अमीरस चाखी ॥ ४ ॥
राधास्वामी भेद दिया मोहिं घट का।
राधास्वामी चरन मोर मन अटका ॥५॥
राधास्वामी दिया काल को झटका।
मेट दिया झगड़ा खट पट का ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम धुंध उजियारा।
राधास्वामी बिन जग बिच अंधियारा ॥७॥
राधास्वामी सेवा करत रहूं री।
राधास्वामी २ जपत रहूं री ॥ ८ ॥
राधास्वामी काल और करम हटाये।
राधास्वामी संसय भरम नसाये ॥ ९ ॥
राधास्वामी सतसंग बचन सुनाये।
राधास्वामी प्यारे सजन सुहाये ॥१०॥

राधास्वामी घट का भेद सुनाई ।
राधास्वामी धुन संग सुरत लगाई ॥११॥
राधास्वामी तिल पट खोल दिखाई ।
राधास्वामी घंटा संख सुनाई ॥१२॥
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाई ।
राधास्वामी चंद्र रूप दरसाई ॥१३॥
राधास्वामी भंवरगुफा दिखलाई ।
मुरली धुन जहां बजे सुहाई ॥१४॥
राधास्वामी सतगुरु रूप लखाया ।
राधास्वामी अलख अगम दरसाया ॥१५॥
राधास्वामी धाम मिला मोहिं भारी ।
महिमां ताकी अकह अपारी ॥१६॥
दया हुई पद मिला इकंत ।
राधास्वामी कीना मोहिं निचिंत ॥१७॥

॥ शब्द १७ ॥

राधास्वामी मत मैं धारा नीका ।
राधास्वामी मत है सब का टीका ॥ १ ॥

राधास्वामी हैं अगम अनामा।
राधास्वामी बसें अधर धुर धामा ॥२॥
ज्ञानी जोगी और सन्यासी।
राधास्वामी मत परतीत न लाय ॥ ३॥
वेदांती और सूफ़ी भाई।
राधास्वामी धाम का खोज न पाय ॥४॥
बुध चतुराई सबहिन कीनी।
राधास्वामी चरन प्रीत नहिं लाय ॥ ५ ॥
विद्या में सब गये भुलाई।
राधास्वामी भक्ती रीत न पाय ॥ ६ ॥
दृष्टी का कुछ साधन करते।
राधास्वामी जुगत न चित्त समाय ॥ ७॥
निरख प्रकाश फूल रहे मन में।
राधास्वामी बिन सब धोखा खाय ॥८॥
यह प्रकाश माया की छाया।
राधास्वामी नूर धार नहिं पाय ॥ ९ ॥
बाहरमुखी और मत सारे।
राधास्वामी भेद न सुनिया आय ॥१०॥

काल फन्द में सब मत फन्दे ।
राधास्वामी बिन को जाल कटाय ॥११॥
मेरा भाग जगा अब भारी ।
राधास्वामी चर्नन मिलिया आय ॥१२॥
दया मेहर से बचन सुनाये ।
राधास्वामी घट का भेद लखाय ॥१३॥
शब्द पकड़ सुर्त घट में चढ़ती ।
राधास्वामी चरन अमींरस पाय ॥१४॥
दया मेहर से एक दिन मुझको ।
राधास्वामी दें धुर घर पहुंचाय ॥१५॥

॥ शब्द १८ ॥

राधास्वामी चरन सीस में डारा ।
राधास्वामी कीन मोर उपकारा ॥ १ ॥
राधास्वामी छिन में लेहिं सुधार ।
राधास्वामी दें पद अगम अपार ॥ २ ॥
राधास्वांमी सरन जीव जो आवें ।
राधास्वामी धुर तक उन्हें निभावें ॥ ३ ॥

राधास्वामी मेहर न जाय बखानी ।
राधास्वामी जम से जीव छुटानी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
सोई घर जावे धुन सुन कर ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीना अगम संदेस ।
दूर हटाया माया लेस ॥ ६ ॥
राधास्वामी घर की बाट लखाई ।
काल से लीने जीव बचाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी देकर अपना हाथ ।
राखा मोहिं निज चरनन साथ ॥ ८ ॥
राधास्वामी अचरज दया करी री ।
उमंग २ उन चरन पड़ी री ॥ ९ ॥
राधास्वामी धुर से मेहर कराई ।
बालपने से चरन लगाई ॥१०॥
राधास्वामी दिया मोहिं भक्ती दान ।
घट में प्रीत जगाई आन ॥११॥
निस दिन रहूं राधास्वामी अधार ।
राधास्वामी करें मेरा काज सम्हार ॥१२॥

राधास्वामी चरन भरोसा भारी ।
राधास्वामी सरन सहारा भारी ॥१३॥
राधास्वामी चरन बसे मेरे मन में ।
राधास्वामी नाम जपूं नित तन में ॥१४॥
राधास्वामी महिमां क्या कहूं गाई ।
मोहिं निर्गुन को लिया अपनाई ॥१५॥
आस बास मेरा राधास्वामी चरना ।
लाज काज मेरा राधास्वामी सरना ॥१६॥
राधास्वामी बिन कोइ नज़र न आवे ।
राधास्वामी संग चित थिरता पावे ॥१७॥
मैं सब बिध हूं औगुनहारा ।
राधास्वामी दिया मोहिं चरन सहारा ॥१८॥
राधास्वामी सब बिध दया करी री ।
गुन उनका कस गाऊं अली री ॥१९॥
मैं राधास्वामी बिन और न जानूं ।
राधास्वामी बिन कोइ और न मानूं ॥२०॥
कहां तक महिमां राधास्वामी गाऊं ।
सीस चरन धर चुप्प रहाऊं ॥२१॥

॥ शब्द १९ ॥

राधास्वामी चरन पर जाऊं बलिहार ॥१॥
राधास्वामी सरन मम हिरदे धार ॥२॥
राधास्वामी दरस रहूं नित्त निहार ॥३॥
राधास्वामी बचन सुनूं चित्त सम्हार ॥४॥
राधास्वामी से पाऊं भेद अपार ॥ ५ ॥
राधास्वामी उतारें भौ जल पार ॥ ६ ॥
राधास्वामी सुनावें घंटा सार ॥ ७ ॥
राधास्वामी चढ़ावें गगन मंझार ॥ ८ ॥
राधास्वामी लखावें चंद्र उजार ॥ ९ ॥
राधास्वामी सुनावें सोहंग सार ॥१०॥
राधास्वामी दिखावें सत दरबार ॥११॥
राधास्वामी करावें अलख दीदार ॥१२॥
राधास्वामी बढ़ावें अगम से प्यार ॥१३॥
राधास्वामी पहुचावें निज घरबार ॥१४॥
राधास्वामी की रहूं नित शुकर गुज़ार ॥१५॥
राधास्वामी मिटाये सब दुख भार ॥१६॥

॥ शब्द २० ॥

भूल और भरम बढ़ा जग माहिं ।
संत मत राधास्वामी मानें नाहिं ॥ १ ॥
जीव सब माया के बंदे ।
बिना राधास्वामी रहें गंदे ॥ २ ॥
काल के जाल फंसे सब आय ।
बिना राधास्वामी कौन छुटाय ॥ ३ ॥
भेद राधास्वामी मत कोई सुनाय ।
भरम कर नहिं सुनते चित लाय ॥ ४ ॥
खोज निज घर का दीना त्याग ।
बचन में राधास्वामी मन नहिं लाग ॥ ५ ॥
दुक्ख सुख सहते बहु भांती ।
चरन राधास्वामी बिन नहिं शांती ॥ ६ ॥
काल संग नित धोखा खाते ।
दया राधास्वामी नहिं पाते ॥ ७ ॥
समझ तौभी नहिं चित लाते ।
नाम राधास्वामी नहिं गाते ॥ ८ ॥

होय इन जीवन का तब काम ।
करें जब राधास्वामी मेहर तमाम ॥ ९ ॥
भाग मैं अपना रहूं सराय ।
लिया मोहिं राधास्वामी चरन लगाय ॥१०॥
मेहर से दीनी सुरत जगाय ।
दिया मोहिं राधास्वामी शब्द लखाय ॥११॥
सिखाई भाव भक्ति की रीत ।
दई मोहिं राधास्वामी घट परतीत ॥१२॥
करूं मैं निस दिन राधास्वामी संग ।
चरन में धारूं ढंग उमंग ॥१३॥
करें राधास्वामी मेरी सहाय ।
चरन में दिन २ प्रीत बढ़ाय ॥१४॥
गाऊं मैं राधास्वामी गुन दम दम ।
नहीं कोइ राधास्वामी सा हम दम ॥१५॥

॥ शब्द २१ ॥

राधास्वामी मुझ पर मेहर करी री ।
मन और सूरत पकड़ धरे री ॥ १ ॥

राधास्वामी लिया मोहिं खैंच बुलाय ।
राधास्वामी दिया घट भेद सुनाय ॥२॥
राधास्वामी लिया लगा चरनन से ।
राधास्वामी लिया छुटा करमन से ॥३॥
राधास्वामी दीनी भूल मिटाय ।
राधास्वामी दीने भरम बहाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दिया मोहिं सतसंग ।
दिये जनाय मोहिं भक्ती ढंग ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीने सब मल धोय ।
राधास्वामी दिये बिकार सब खोय ॥ ६ ॥
राधास्वामी छुटा लिया मोहिं जग से ।
राधास्वामी बचा लिया मोहिं ठग से ॥७॥
राधास्वामी गुन नहिं बिसरूं कबही ।
राधास्वामी चरन न छोड़ूं कबही ॥८॥
राधास्वामी बचन बिचार रहूं री ।
राधास्वामी नाम पुकार रहूं री ॥ ९ ॥
राधास्वामी जुगत कमाय रहूं री ।
राधास्वामी भक्ति जगाय रहूं री ॥१०॥

राधास्वामी धुन में सुरत लगाऊं।
राधास्वामी बल मन गगन चढ़ाऊं ॥११॥
राधास्वामी दया गुरु मूरत ताकूं।
राधास्वामी मया सतगुरु पद झांकूं ॥१२॥
राधास्वामी बल मैं अलख लखूं री।
राधास्वामी दया घर अगम धसूं री ॥१३॥
राधास्वामी चरनन जाय मिलूं री।
राधास्वामी धुन में जाय रलूं री ॥१४॥

॥ शब्द २२॥

राधास्वामी परम पुरुष दातारे।
राधास्वामी पूरन धनी हमारे ॥ १ ॥
राधास्वामी सतगुरु परम पियारे।
राधास्वामी प्रीतम प्रान अधारे ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन हिये में धारे।
राधास्वामी सरन पकाय सम्हारे ॥ ३ ॥
राधास्वामी भक्ती साज दिया री।
राधास्वामी जीव उबार लिया री ॥४॥

राधास्वामी मत क्या करूं बड़ाई।
निज घर सब से ऊंच दिखाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी सहज जोग बतलाया।
सुरत शब्द संजोग कराया ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया हुआ मन निश्चल।
राधास्वामी मेहर हुआ चित निरमल ॥ ७ ॥
राधास्वामी दई घट में परतीत।
राधास्वामी चरनन बाढ़ी प्रीत ॥ ८ ॥
राधास्वामी घट का पाट खुलाय।
राधास्वामी अंतर बाट लखाय ॥ ९ ॥
राधास्वामी दिये मन सुरत चढ़ाय।
गगन सिंघासन बैठे जाय ॥१०॥
राधास्वामी बल गई सूरत दौड़।
पहुंची जाय सतपुर की ओर ॥११॥
राधास्वामी लीना चरन मिलाय।
धाम अनामी निरखा जाय ॥१२॥
राधास्वामी दई मेरी सुरत संवार।
मेट दई सब जम की कार ॥१३॥

राधास्वामी के रहूं नित गुन गाय ।
राधास्वामी दिया मेरा काज बनाय ॥१४॥

॥ शब्द २३ ॥

राधास्वामी धरा जग गुरु अवतार ।
राधास्वामी उतारें सब को पार ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन दृढ़ पकडूं आज ।
राधास्वामी दिया मोहिं भक्ती साज ॥२॥
राधास्वामी सुनाई घट में धुन ।
राधास्वामी चढाई सूरत सुन ॥ ३ ॥
राधास्वामी सुनाई मुरली सार ।
राधास्वामी दिखाया सत दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी अलख और अगम लखाय ।
निज घर दीनी सुरत चढ़ाय ॥ ५ ॥
कर बिसराम हुई मगनानी ।
राधास्वामी गुन नित रहूं बखानी ॥६॥
सब जीवों को कहूं संदेस ।
राधास्वामी से मिल करो अदेस ॥ ७ ॥

आओ पकड़ो राधास्वामी चरना।
जस तस आओ राधास्वामी सरना॥ ८॥
सतसंग कर राधास्वामी रंग धारो।
मन की सबहि उचंग बिसारो॥ ९॥
राधास्वामी सम नहिं कोइ हितकारी।
राधास्वामी तुम को लेहिं सुधारी॥१०॥
ले उपदेश करो सतसंग।
राधास्वामी बल तज जगत कुरंग॥११॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
राधास्वामी काज करें तब छिन में॥१२॥

॥ शब्द २४ ॥

राधास्वामी महिमा को सके गाय।
बेद कतेब रहे भरमाय॥ १॥
राधास्वामी भेद न कोई जाने।
शेष महेश सब रहे भुलाने॥ २॥
राधास्वामी धाम अति अगम अपारा।
ब्रह्म और पारब्रह्म रहे वारा॥ ३॥

नारद सारद बिश्नु महेशा ।
राधास्वामी पद कोइ सुना न देखा ॥४॥
राधास्वामी घर कोइ प्रेमी जावे ।
जोत निरंजन दखल न पावे ॥ ५ ॥
जिसको मिलें भाग से सतगुरु ।
सोई जावे राधास्वामी धुर पुर ॥ ६ ॥
राधास्वामी देस है सब से न्यारा ।
पहुंचे वहां सतगुरु का प्यारा ॥ ७ ॥
सतसंग कर सेवा को धावे ।
राधास्वामी चरनन ध्यान लगावे ॥८॥
सुरत शब्द का मारग धारे ।
निस दिन राधास्वामी नाम पुकारे ॥९॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावे दिन दिन ।
राधास्वामी चरन पै वारे तन मन ॥१०॥
राधास्वामी आज्ञा चित से माने ।
राधास्वामी सम कोइ और न आने ॥११॥
अस २ जो कोई कार कमावे ।
दया मेहर राधास्वामी की पावे ॥१२॥

राधास्वामी उसका काज बनावें।
छिन २ सूरत अधर चढ़ावें ॥१३॥
इक दिन पहुंचावें धुरधाम।
राधास्वामी चरन मिलै बिस्राम ॥ १४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

राधास्वामी नाम की महिमां भारी।
राधास्वामी धाम अथाह अपारी ॥ १ ॥
राधास्वामी धार उतर कर आई।
सत्तलोक तक रचन रचाई ॥ २ ॥
राधास्वामी दयाल देस रच लीना।
महिमां वाकी काहु नहिं चीना ॥ ३ ॥
ऐसा अद्भुत राधास्वामी देसा।
नहिं व्यापै वहां काल कलेशा ॥ ४ ॥
सब जीवों को कहूं सुनाई।
राधास्वामी पद का निश्चय लाई ॥ ५ ॥
सतसंग करो बूझ तब पाई।
करनी कर जग भरम नसाई ॥ ६ ॥

दीन होय धारो उपदेशा ।
चरन पकड़ जाओ राधास्वामी देसा ॥ ७ ॥
राधास्वामी की धारो जुगती ।
तब पाओ तुम सच्ची मुक्ती ॥ ८ ॥
मेरे मन आनंद घनेरा ।
राधास्वामी चरन हुआ मैं चेरा ॥ ९ ॥
जब से राधास्वामी चरन गहे री ।
करम भरम सब आप दहे री ॥ १० ॥
सुरत शब्द का मारग ताकूं ।
राधास्वामी दया अधर घर झांकूं ॥ ११ ॥
राधास्वामी दाता दीन दयाला ।
मेहर करी मोहिं किया निहाला ॥ १२ ॥

॥ शब्द २६ ॥

राधास्वामी सम कोइ मित्र न जग में ।
राधास्वामी प्रीत धसी रग २ में ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन मेरे चित्त बसे री ।
राधास्वामी बिन जिव फांस फसे री ॥ २ ॥

राधास्वामी दिया मोहिं शब्द सिंगार ।
राधास्वामी लई मेरी सुरत निकार ॥ ३ ॥
राधास्वामी दिये मेरे बंधन तोड़ ।
राधास्वामी लिया मन चरनन जोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दई जम फांसी काट ।
राधास्वामी खोली घट में बाट ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेट दिये कल अंक ।
राधास्वामी चित से किया निसंक ॥ ६ ॥
राधास्वामी दिया शब्द परखाय ।
घट में सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी खोल दिये हिये नैना ।
मोहिं सुनाये घट में बैना ॥ ८ ॥
राधास्वामी पिरथम पाट खुलाया ।
जोत निरंजन पद दरसाया ॥ ९ ॥
राधास्वामी वहां से गगन चढ़ाई ।
शब्द गुरू से मेल कराई ॥ १० ॥
राधास्वामी अक्षर पुरुष लखाया ।
सुन में रारंग शब्द सुनाया ॥ ११ ॥

राधास्वामी भंवरगुफा दरसाई ।
मोहन मुरली बजै सुहाई ॥ १२ ॥
राधास्वामी दया फिर सतपुर लीना ।
अलख अगम का दरशन कीना ॥ १३ ॥
राधास्वामी वहां से अधर चढ़ाई ।
निज चरनन में लिया मिलाई ॥ १४ ॥
क्या बिध कर राधास्वामी गुन गाऊं ।
हार मान अब चरन समाऊं ॥ १५ ॥

॥बचन दसवां प्रेम बिलास भाग दूसरा॥

सुरतिया

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

सुरतिया गाय रही।
नित राधास्वामी नाम दयाल ॥ १ ॥
नाम बिना कोइ ठौर न पावे।
नाम बिना सब बिरथा घाल ॥ २ ॥
नामहिं से नामी को लखिये।
नाम करे सब की प्रतिपाल ॥ ३ ॥
नाम कहो चाहे शब्द बखानो।
शब्द का निरखो नूर जमाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी शब्द खोजती चाली।
सुन २ धुन अब हुई निहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुरतिया रही पुकार पुकार ।
सरन में सतगुरु के आओ ॥ १ ॥
जो यह बचन न मानो मेरा ।
तो जमपुर जाय पछताओ ॥ २ ॥
बारम्बार धरी तुम देही ।
दुख सुख संग नित भरमाओ ॥ ३ ॥
जीव काज अपना कुछ सोचो ।
संत चरन में चित लाओ ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की करो कमाई ।
घट अंतर कुछ सुख पाओ ॥ ५ ॥
गुरु चरनन में करो पिरीती ।
भाग आपना जगवाओ ॥ ६ ॥
सेवा कर प्रसन्नता लेवो ।
सुरत अधर में चढ़वाओ ॥ ७ ॥
जीव काज तब होवे तुम्हरा ।
राधास्वामी चरनन जाय समाओ ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुरतिया सुमिर रही ।
सतगुरु का छिन २ नाम ॥ १ ॥
प्रेम अंग ले पकड़े चरना ।
बिसर गये सब जग के काम ॥ २ ॥
सतसंग में चित अति हुलसाना ।
पाया वहां आराम ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन बिन चैन न आवे ।
निरखत रहूं छबि आठों जाम ॥ ४ ॥
हित कर करत बीनती गुरु से ।
देव गुरू अस अमृत जाम ॥ ५ ॥
रहूं अचिंत होय मस्ताना ।
सुरत चढ़ाय लखूं गुरुधाम ॥ ६ ॥
मेहर करो अस राधास्वामी प्यारे ।
मैं तुम्हरी चेरी बिन दाम ॥ ७ ॥

मेहर करी गुरु भेद सुनाया ।
शब्द २ का कहा मुक़ाम ॥ ८ ॥
बिरह अंग ले करो अभ्यासा ।
सुरत लगाओ होय निस्काम ॥९॥
सहज २ चढ़ चलो अधर में ।
निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम ॥१०॥
वहां से सतगुरु दरस निहारो ।
राधास्वामी चरन करो बिस्राम ॥११॥
दया मेहर बिन काज न होई ।
राधास्वामी दया लेव संग साम ॥१२॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरतिया छोड़ चली ।
अब छिन छिन माया देस ॥ १ ॥
नैन नगर में बसी आय कोइ दिन ।
पाया करम कलेस ॥ २ ॥
करम भरम में बहु बिध उलझी ।
भूल गई निज देस ॥ ३ ॥

जाल बिछाया काल कराला।

फांस लिये जिव गहि कर केस ॥ ४ ॥

कोई जीव बचने नहिं पावे।

बिन सतगुरु उपदेस ॥ ५ ॥

याते प्यारी कहना मानो।

कर गुरु को आदेस ॥ ६ ॥

दीन होय ले भेद गुरू से।

सुरत शब्द संदेस ॥ ७ ॥

चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर।

पहुंचो पद निज शेष ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सुरतिया मेल करत।

गुरु प्रेमी जन के साथ ॥ १ ॥

दीन दिल गुरु संग करती हेत।

प्रेमी जन की सुन सुन बात ॥ २ ॥

भक्ति की रीती दई बताय।

करत गुरु सेवा दिन और रात ॥ ३ ॥

चित्त धर सतसंग के बचना।
चरन गुरु हिरदे में नित ध्यात ॥ ४ ॥
शब्द धुन से रही चित की जोड़।
निरख गुरु लीला घट मुसक्यात ॥ ५ ॥
हुआ अस निश्चय मन मेरे।
बिना गुरु सबही धोखा खात ॥ ६ ॥
प्रीत जो गुरु चरनन लावे।
साध संग में जो चित्त बसात ॥ ७ ॥
वही जन मेहर गुरू पावे।
बचावे काल करम की घात ॥ ८ ॥
उलट मन चढ़े गगन पर धाय।
शब्द में सूरत सहज समात ॥ ९ ॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार।
सत्तपुर जावे पावे शांत ॥ १० ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुरतिया दीन हुई।
लख राधास्वामी दया अपार ॥ १ ॥

जगत भाव में रही भरमाती ।
धर मन में अहंकार ॥ २ ॥
मान बड़ाई भोग बासना ।
याही कारन करती कार ॥ ३ ॥
परमारथ की सुध नहिं लाती ।
गुरु भक्तन संग किया न प्यार ॥ ४ ॥
निंद्या कर कर पाप बढ़ाती ।
मन के छोड़त नहीं बिकार ॥ ५ ॥
औसर पाय मिली सतगुरु से ।
बचन सुनाए गुरु ने सार ॥ ६ ॥
जनम मरन नरकन के दुख सुख ।
गुरु ने दरसाये कर प्यार ॥ ७ ॥
तुच्छ देख इंद्रिन के भोगा ।
झूठा लागा जगत असार ॥ ८ ॥
दीन चित्त होय पड़ी गुरु चरना ।
मेहर करी सतगुरु दातार ॥ ९ ॥
भेद जनाय कराया सतसंग ।
सुरत लगी अब धुन की लार ॥ १० ॥

चरन सरन गुरु हिये में धारी ।
राधास्वामी मेहर से कीन्हा पार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरतिया सोच करत ।
अब किस बिध उतरूं पार ॥ १ ॥
गुरु भेदी ने पता बताया ।
सुरत शब्द मारग रहो धार ॥ २ ॥
सतसंग करो बचन चित धारो ।
मन इंद्रिन को रोको झार ॥ ३ ॥
गुरु परतीत प्रीत हिये धर कर ।
करनी करो सम्हार ॥ ४ ॥
सुन अस बचन उमंग हुई भारी ।
पहुंची गुर दरबार ॥ ५ ॥
बचन सुनत मन निश्चय बाढ़ा ।
संशय भरम निकार ॥ ६ ॥
भेद पाय अभ्यास करूं नित ।
तन मन गुरु पर वार ॥ ७ ॥

सरन सम्हार चरन दृढ़ पकडूं।
सहजहि होय उद्धार ॥ ८ ॥
राधास्वामी गत मत अगम अपारा।
राधास्वामी शब्द सार का सार ॥ ९ ॥
यह निज घर बड़भागी पावे।
सब से होय नियार ॥ १० ॥
मुझ ग़रीब की ख़ूब सुधारी।
राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सुरतिया जाग उठी।
गुरू नाम सुमिर धर प्यार ॥ १ ॥
बहु दिन जग संग भरमत बीते।
खोज न कीन्हा निज घर बार ॥ २ ॥
मन इंद्री संग रही भुलानी।
सुध नहिं कीनी को करतार ॥ ३ ॥
राधास्वांमी सतगुरू मिले दया कर।
उन घट भेद सुनाया सार ॥ ४ ॥

काल करम बहु अटक लगाये ।
मन और सुरत बहुत रहे वार ॥ ५ ॥
गुरु दयाल मेरी फिर सुध लीनी ।
खैंच लगाया सतसंग लार ॥ ६ ॥
अमृत रूपी बचन सुनाये ।
दर्शन दे कीना निरवार ॥ ७ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत हिये में ।
चरन सरन बख़्शा आधार ॥ ८ ॥
सुमिरन ध्यान शब्द अभ्यासा ।
जुगत सुनाई किरपा धार ॥ ९ ॥
राधास्वामी रूप धिआऊं निस दिन ।
राधास्वामी गाऊं नाम अपार ॥१०॥
राधास्वामी दया संग ले घट में ।
सुरत चढ़ाऊं गगन मंझार ॥११॥
सतपुर सत्त शब्द धुन सुन कर ।
परसूं राधास्वामी चरन सम्हार ॥१२॥

॥ शब्द ९ ॥

सुरतिया कहत सुनाय सुनाय ।
चरन गुरु गहो सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
क्यों माया संग भूले भाई ।
क्यों निज घर को दिया बिसार ॥ २ ॥
यह ग़फ़लत फिर बहुत सतावे ।
जल्दी करो होव हुशियार ॥ ३ ॥
खोजो सतगुरु अधर ठिकानी ।
उनके चरन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
प्रीत भाव से करो सतसंगत ।
बचन सुनो हिये उमंग सम्हार ॥ ५ ॥
भेद पाय तुम धरो धियाना ।
निरखो घट में एक गुलज़ार ॥ ६ ॥
शब्द गुरू संग आरत करना ।
घट में अद्भुत दरस निहार ॥ ७ ॥
गुरु का बल ले चढ़ो अधर में ।
सुन और महासुन्न के पार ॥ ८ ॥

मुरली बीन बजावत चाली ।
पहुंची अलख अगम दरबार ॥ ९ ॥
राधास्वामी दरस निहारत ।
चरन सरन गह बैठी हार ॥१०॥
ऐसी दुर्लभ भक्ति कमाई ।
राधास्वामी कीन्ही दया अपार ॥११॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन ।
सहज लिया मोहिं अधम उबार ॥१२॥

॥ शब्द १० ॥

सुरतिया अटक रही ।
घर माया प्यार ॥ १ ॥
अनेक पदारथ और रस भोगा ।
काल रचाये कर बिस्तार ॥ २ ॥
मन इच्छा दोउ प्यादे उसके ।
रहें सुरत पर नित असवार ॥ ३ ॥
जित चाहे तित उसे घुमावें ।
भरमत रहे सदा नौवार ॥ ४ ॥

सुरत अजान न बूझै फंदा ।
रच पच माया बिछाया जार ॥ ५ ॥
निज घर की कोइ सुध नहिं पावे ।
माया के नहिं जावे पार ॥ ६ ॥
जो जिव संत सरन में आवें ।
उनका मेहर से करें उबार ॥ ७ ॥
मेरा भाग जगा अब धुर का ।
राधास्वामी संगत पाई सार ॥ ८ ॥
मेहर करी सतसंग मिलाया ।
सूझ बूझ दई किरपा धार ॥ ९ ॥
निज घर का मोहिं भेद सुनाया ।
सुरत शब्द दिया मारग सार ॥१०॥
बिरह उमंग ले करूं कमाई ।
चरन सरन गुरु हिये सम्हार ॥११॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी ।
सहज उतारें मुझको पार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सुरतिया मान तजत ।
आज सतसंग में रस पाय ॥ १ ॥
मन का संग कर हुई दिवानी ।
भोगन में लिपटाय ॥ २ ॥
जगत बासना नित्त बढ़ावत ।
दुक्ख सहत फिर२ पछताय ॥ ३ ॥
करम धरम संग हुई बावरी ।
देवी देव पुजाय ॥ ४ ॥
तीरथ बर्त जगत ब्योहारा ।
नित्त करे सिर करम चढ़ाय ॥ ५ ॥
संतन की बानी नहिं पढ़ती ।
मोह जाल में रही फसाय ॥ ६ ॥
भाग जगा गुरु सन्मुख आई ।
निज घर का उन भेद सुनाय ॥ ७ ॥
जग का झूठा खेल पसारा ।
बहु बिध गुरु ने दिया समझाय ॥ ८ ॥

समझ बूझ सतसंग में लागी।
मान बड़ाई तज दई आय ॥ ९ ॥
गुरु से प्रीत करत अब सांची।
सुरत शब्द की कार कमाय ॥ १० ॥
घट में निरख बिलास नवीना।
गुरु चरनन परतीत बढ़ाय ॥ ११ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर।
लीना अपना काज बनाय ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरतिया बोल रही।
जीवन को हेला मार ॥ १ ॥
जो चाहो सच्चा निरवारा।
सतगुरु सरन आओ धर प्यार ॥ २ ॥
सतसंग कर गुरु बचन सम्हारो।
जग का भय और भाव निकार ॥ ३ ॥
राधास्वामी चरनन धारो आसा।
टेक पुरानी सब तज डार ॥ ४ ॥

करम भरम सब निस्फल जानो।
बहिरमुख करनी देव बिसार ॥ ५ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा।
घट में करनी करो सम्हार ॥ ६ ॥
भोग बासना चित से टारो।
त्यागो मन के सबही बिकार ॥ ७ ॥
धर परतीत करो गुरु सेवा।
दिन दिन प्रेम जगाओ सार ॥ ८ ॥
तब मन सुरत लगें घट धुन में।
देखें अंतर बिमल बहार ॥ ९ ॥
गुरु बल हिये धर चढ़ें अधर में।
मगन होंय सुन धुन झनकार ॥१०॥
शब्द शब्द का निरख प्रकाशा।
पहुंचे सुरत सेत दरबार ॥ ११ ॥
तब होवे सच्चा उद्धारा।
राधास्वामी चरन निहार ॥ १२ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सुरतिया अमर हुई।
अब संत धाम में जाय ॥ १ ॥
या जग में कोइ ठहर न पावे।
काल सबन को खाय ॥ २ ॥
धन और मान भोग इन्द्री के।
छिनभंगी कोइ थिर न रहाय ॥ ३ ॥
याते जतन करो सब कोई।
जासे जनम मरन छुट जाय ॥ ४ ॥
सुरत शब्द बिन बचे न कोई।
बिन सतगुरु कोइ बाट न पाय ॥ ५ ॥
जब लग सुरत न पहुंचे सतपुर।
काल देस में रहे भरमाय ॥ ६ ॥
याते चरन गहो सतगुरु के।
दीन होय उन सरनी आय ॥ ७ ॥
सेवा कर सतसंग कर उनका।
परमारथ का भाग जगाय ॥ ८ ॥

प्रीत प्रतीत धार उन चरना ।
सुरत शब्द में नित्त लगाय ॥ ९ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे ।
दया करें सुर्त अधर चढ़ाय ॥ १० ॥
सतपुर जाय अमीं रस पीवे ।
मगन होय धुन बीन बजाय ॥ ११ ॥
जनम मरन की त्रास नसाई ।
राधास्वामी धाम मिला निज आय ॥ १२ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरतिया लिपट रही ।
मन इंद्रियन नाल ॥ १ ॥
काल शिकारी घेरा डाला ।
माया आन बिछाया जाल ॥ २ ॥
सब जिव उनकी फांस फंसाने ।
भूल गये निज घर की चाल ॥ ३ ॥
करम भरम संग हुए बावरे ।
चौरासी में पड़े बेहाल ॥ ४ ॥

करम भोग दुख सहैं घनेरा ।
को काटैं उनका जंजाल ॥ ५ ॥
जो जिव आये सतगुरु सरना ।
छूट गये उनके दुख साल ॥ ६ ॥
मेरा भाग उदय हुआ भारी ।
सतगुरु संत चरन परसाल ॥ ७ ॥
निज घर भेद दया से दीना ।
सुरत शब्द मारग दरसाल ॥ ८ ॥
सतसंग में मोहिं लिया मिलाई ।
अचरज बचन सुनाये हाल ॥ ९ ॥
दृढ़ परतीत धरी चरनन में ।
मिला प्रेम का धन और माल ॥ १० ॥
दीन निरख मोहिं राधास्वामी प्यारे ।
मेहर दया से सुरत चढ़ाल ॥ ११ ॥
नभ में होय गई गगनापुर ।
मार दिया दल काल कराल ॥ १२ ॥
अनहद बाजे बाजन लागे ॥
निरख रही स्रुत सूरज लाल ॥ १३ ॥

अक्षर धुन सुन आगे चाली ।
केल करत वहां हंसन नाल ॥ १४ ॥
भंवरगुफा चढ़ अधर सिधारी ।
हैरां रहा देख महाकाल ॥ १५ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष दयाल ॥ १६ ॥
आरत कर गह राधास्वामी चरना ।
आनंद पाय हुई तृप्ताल ॥ १७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सुरतिया चेत रही ।
गुरु बचन सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
परमारथ चित धार हेत कर ।
पढ़त सुनत रही बानी सार ॥ २ ॥
राधास्वामी दया करी मोपै धुर से ।
दीना मुझ को अगम बिचार ॥ ३ ॥
समझ समझ कर सुने बचन गुरु ।
बूझा परम तत्त निज सार ॥ ४ ॥

शब्द बिना नहिं मारग सूझै ।
प्रेम बिना नहिं खुलै दुआर ॥ ५ ॥
बिन सतगुरु कोई राह न पावे ।
गत मत उनकी अगम अपार ॥ ६ ॥
ऐसी समझ धार कर हिये में ।
लीना राधास्वामी चरन अधार ॥ ७ ॥
और तरह कोई बाच न पावे ।
कर्म और काल बड़े बरियार ॥ ८ ॥
नीच ऊंच जोनी में भरमे ।
कभी न होवे जीव उबार ॥ ९ ॥
याते सब को कहूं सुनाई ।
सरन गहो सतगुरु दरबार ॥ १० ॥
मै बड़ भाग कहूं क्या अपना ।
राधास्वामी लिया मोहिं गोद बिठार ॥११॥
बचन सार मोहिं भाख सुनाये ।
दरस दिया निज किरपा धार ॥१२॥
सुरत शब्द का भेद अमोला ।
सुमिरन ध्यान जुगत कही सार ॥१३॥

मन इंद्री को रोक अंदर में ।
शब्द की परखूं घट में धार ॥१४॥
मन चंचल की चाल निहारूं ।
दूर हटाऊं सबही बिकार ॥१५॥
प्रीत प्रतीत जगाय हिये में ।
नित प्रति निरखूं नई बहार ॥१६॥
राधास्वामी बल हिरदे धर अपने ।
सुरत चढ़ाऊं गगन मंझार ॥१७॥
सहसकंवल त्रिकुटी लख लीला ।
सुन्न और महासुन्न धस पार ॥१८॥
भंवरगुफा का ताक़ उघारूं ।
सत्त अलख और अगम निहार ॥१९॥
राधास्वामी धाम अपारा ।
परस चरन रहूं आरत धार ॥२०॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा ।
चरनन में लिया मोहिं कर प्यार ॥२१॥

भेद का अंग

॥ शब्द १६ ॥

सुरतिया लाल हुई ।
चढ़ गगन निरख गुरु रूप ॥ १ ॥
घंटा संख गरज धुन सुनकर ।
छोड़ दिया भौ कूप ॥ २ ॥
आसा तृश्ना मन्सा जग की ।
फटक दई ले गुरु का सूप ॥ ३ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
निरखा सूरज सेत सरूप ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का दर्शन करके ।
पहुंची राधास्वामी धाम अरूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरतिया झांक रही ।
गुर दरस अनूप ॥ १ ॥
मन और सुरत साध कर घट में ।
नभ चढ़ निरखा जोत सरूप ॥ २ ॥

अधर चढ़त पहुंची गगना पुर ।
जहां छांह नहिं खिल रही धूप ॥ ३ ॥
भंवरगुफा के हो गई पारा ।
निरखा जाय पुरुष सतरूप ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु यह धाम न पावे ।
जीव पड़े सब माया कूप ॥ ५ ॥
अलख पुरुष के दरशन करके ।
अगम पुरुष निरखा कुल भूप ॥ ६ ॥
अचरज दरशन राधास्वामी पाये ।
अकह अपार अनाम अरूप ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरतिया झूल रही ।
आज धरन गगन के बीच ॥ १ ॥
घेर फेर मन घट में लाई ।
सुरत अधर में खींच ॥ २ ॥
गगन तख़्त पर गुरू बिराजे ।
मेहर करी मोहिं लीना ईंच ॥ ३ ॥

माया दल थक रहा डगर में।
काल करम दोउ डाले भींच ॥ ४ ॥
होय निसंक चढ़ूँ नित घट में।
सैर करूं पद ऊंच और नीच ॥ ५ ॥
सुन सतशब्द गई अमरापुर।
छोड़ दई संगत मन नीच ॥ ६ ॥
घट में भक्ती पौद खिलानी।
प्रेम रूप जल से रही सींच ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन पाय बिस्रामा।
निर्भय सोऊं आखें मीच ॥ ८ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सुरतिया बिगस रही।
लख कंवल कली ॥ १ ॥
उलटत दृष्टि जोड़ तिल अंदर।
नभ की ओर चली ॥ २ ॥
सहसकंवल जाय बासा कीना।
जहां वहां जोत बली ॥ ३ ॥

घंटा संख तजी धुन दोई ।
निरखी आगे गगन गली ॥ ४ ॥
माया थाक रही मग मांहीं ।
हार रहा अब काल बली ॥ ५ ॥
अक्षर निःअक्षर के पारा ।
सत्त शब्द में जाय रली ॥ ६ ॥
संत मते की सार न जानी ।
बेद कतेब रहे हार तली ॥ ७ ॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ८ ॥
मेहर दया जस मोपर कीनी ।
गुन उनका कस गाऊं अली ॥ ९ ॥

॥ शब्द २० ॥

सुरतिया गगन चढ़ी ।
सुन धुन झनकार ॥ १ ॥
बिरह दरद ले सन्मुख आई ।
लीना भेद सम्हार ॥ २ ॥

मन को मोड़ इंदिरी रोकत।
दिये बिकार निकार ॥ ३ ॥
सुरत शब्द संग चढ़त अधर में।
खोला मोक्ष दुआर ॥ ४ ॥
घंटा संख शब्द सुन हरखी।
निरखा जोत उजार ॥ ५ ॥
वहां से चल पहुंची त्रिकुटी में।
सुनी गरज धुन ओअंकार ॥ ६ ॥
सुन में लखा चंद्र उजियारा।
सुनत रही सारंगी सार ॥ ७ ॥
सुरत धरा अब हंस सरूपा।
चुगती मुक्ता सार ॥ ८ ॥
महासुन्न के चढ़ गई पारा।
सुनी भंवर में सोहंग सार ॥ ९ ॥
सतपुर जाय सुनी धुन बीना।
अलख अगम के होगई पार ॥ १० ॥
राधास्वामी दरस पाय मगनानी।
होय गई अब सूरत सार ॥ ११ ॥

बिरह का अंग

॥ शब्द २१ ॥

सुरतिया तड़प रही ।
गुरु दरस बिना ॥ १ ॥
बिरह अगिन हिये में नित सुलगत ।
चैन न पावत रैन दिना ॥ २ ॥
व्याकुल मन और चित्त उदासा ।
जगत किरत संग सहूं तपना ॥ ३ ॥
राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती ।
दर्शन दो मोहिं कर अपना ॥ ४ ॥
जिस दिन दरस भाग से पाऊं ।
तन मन वारूं और धना ॥ ५ ॥
या जग में मोहिं जान पड़ी अब ।
राधास्वामी बिन नहिं कोइ अपना ॥ ६ ॥
याते सरन गहूं राधास्वामी ।
सेवा करूं गुरु भक्त जनां ॥ ७ ॥

यही उपाव कहा संतन ने ।
यही जतन कर मेरे मना ॥ ८ ॥
राधास्वामी भाग जगाया मेरा ।
सुख पाया मैं आज घना ॥ ९ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सुरतिया भाव भरी ।
अब आई गुरु के घाट ॥ १ ॥
सतसंग करत मैल मन धोवत ।
परमारथ की पाई चाट ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत चरन में धारत ।
खोजत घर की बाट ॥ ३ ॥
सुमिरन ध्यान करत निस बासर ।
माँजत मन का माट ॥ ४ ॥
शब्द संग अब सुरत लगावत ।
खोलत घट का पाट ॥ ५ ॥
धुन की डोर पकड़ सुर्त चालत ।
सहसकंवल में बांधत ठाट ॥ ६ ॥

घंटा संख शब्द धुन गाजे ।
जहां बलत जोत की लाट ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया बिचारी ।
दिये करम सब काट ॥ ८ ॥
चरन सरन दे मोहिं अपनाया ।
खोल दिये अब सभी कपाट ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन धार अब हिये में ।
निरभय सोऊं बिछाये खाट ॥ १० ॥

॥ शब्द २३ ॥

सुरतिया सुनत रही ।
धुन शब्द निरख नभ द्वार ॥ १ ॥
संत बचन को गुनती हर दम ।
शब्द का करत बिचार ॥ २ ॥
घट का भेद दिया नहिं कोई ।
खोजत रही सब से हरबार ॥ ३ ॥
साध मिले जब गुरु के भेदी ।
उन कहा संत मत सार ॥ ४ ॥

ले जुगती करती अभ्यासा ।
मन और सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
मन में पूरी शान्त न पाई ।
आई गुरु दरबार ॥ ६ ॥
सुन सुन भेद मगन हुई मन में ।
घट मे पाया मारग सार ॥ ७ ॥
निश्चल चित होय सुरत लगाई ।
हरख रही सुन धुन झनकार ॥ ८ ॥
नित अभ्यास करूं मैं घट में ।
प्रीत प्रतीत सम्हार ॥ ९ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊं ।
पाऊं उनकी मेहर अपार ॥ १० ॥
काल जीत जाउं भौजल पारा ।
राधास्वामी चरन करूं दीदार ॥ ११ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सुरतिया दर्द भरी ।
रहे निस दिन चित्त उदास ॥ १ ॥

मेहर दया सतगुरु से मांगत ।
चाहत चरनन बास ॥ २ ॥
मन माया से नित प्रति जूझे ।
चरन बिना कोइ और न आस ॥ ३ ॥
सतसंग बचन सार हिये धारत ।
नाम जपत निस बास ॥ ४ ॥
अपनी सी बहु करत कमाई ।
गुरु का धर बिस्वास । ५ ॥
तज जग का ब्योहार असारा ।
रहती गुरु के पास ॥ ६ ॥
मगन होय चित जोड़त धुन से ।
निरखत घट परकाश ॥ ७ ॥
घंटा संख और गरज सुनावत ।
सुन्न में लखती चंद्र उजास ॥ ८ ॥
भंवरगुफा सतलोक शब्द सुन ।
अलख अगम जाय किया निवास ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर ।
मगन हुई पाय अमर बिलास ॥ १० ॥

दीन हीन होय आरत धारी ।
राधास्वामी चरन हुई निज दास ॥११॥

॥ शब्द २५ ॥

सुरतिया जाग रही ।
गुरु चरनन में चित लाय ॥ १ ॥
जनम जनम जग बिच रही सोती ।
माया संग लुभाय ॥ २ ॥
सत पद का कभी खोज न कीना ।
भरमन में दई बैस बिताय ॥ ३ ॥
मेहर हुई सतसंग में आई ।
सतगुरु बचन सुनत हरखाय ॥ ४ ॥
मनन करत धारी गुरु सरना ।
किरतम इष्ट सब दिये बहाय ॥ ५ ॥
भेद पाय घट धुन में लागी ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ६ ॥
ले गुरु दया चली अब घट में ।
नभपुर घंटा संख सुनाय ॥ ७ ॥

गगन जाय सुनती धुन ओअंग।
सुन में मानसरोवर न्हाय ॥ ८ ॥
भंवरगुफा की बंसी बाजी।
सतपुर दर्शन पुरुष दिखाय ॥ ९ ॥
अलख अगम का दर्शन पावत।
छिन २ रही सतगुरु गुन गाय ॥ १० ॥
आगे चढ़ पहुंची धुर धामा।
राधास्वामी चरन समाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सुरतिया तोल रही।
गुरु बचन सार के सार ॥ १ ॥
खोज करत सतसंग में आई।
गुरु का दरस निहार ॥ २ ॥
बचन सुनत मन शांती आई।
मोह रही कर प्यार ॥ ३ ॥
जितने मते जगत में जारी।
सबही थोथे जान असार ॥ ४ ॥

सत पद का कोइ भेद न गावे ।
जीव बहे चौरासी धार ॥ ५ ॥
सतगुर मोहिं घट भेद सुनाया ।
पता दिया मोहिं निज घरबार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द की राह लखाई ।
पकड़ चढ़ूं अब धुन की धार ॥ ७ ॥
प्रीत प्रतीत चरन में धारूं ।
करम धरम का पटकूं भार ॥ ८ ॥
उमंग सहित करनी करूं निस दिन ।
राधास्वामी चरन सरन आधार ॥ ९ ॥
संसय भरम उड़ाय दिये सब ।
गुरु चरनन पर तन मन वार ॥१०॥
दिन दिन भाग जगाऊं अपना ।
सुरत शब्द की करती कार ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी प्यारे ।
पार किया मोहिं किरपा धार ॥१२॥

॥ शब्द २७ ॥

सुरतिया तरस रही ।
गुरु दर्शन को दिन रात ॥ १ ॥
जग ब्योहार पड़ा अस पीछे ।
घर नहिं छोड़ा जात ॥ २ ॥
तड़प तड़प मन होय उदासा ।
रहे घट में अकुलात ॥ ३ ॥
बहु बिध कर मैं जुगत उपाऊं ।
पर कोई भी पेश न जात ॥ ४ ॥
सतसंग बिन मन चैन न पावे ।
चित में रहूं नित्त घबरात ॥ ५ ॥
संसय भरम उठावत काला ।
भजन ध्यान में रस नहिं पात ॥ ६ ॥
बिरह उठत नित हिये में भारी ।
और कहीं मन लगे न लगात ॥ ७ ॥
राधास्वामी से अब करूं पुकारी ।
देव प्रेम की मोहिं अब दात ॥ ८ ॥

जल्द २ मैं दर्शन पाऊं ।
सतसंग में नए बचन सुनात ॥ ९ ॥
तब तन मन मेरे शांत धरावें ।
दर्शन और बचन रस पात ॥१०॥
जो अस मौज न होवे जल्दी ।
दूर करो मन के उत्पात ॥११॥
घट में नित मोहिं दर्शन दीजे ।
धुन संग मन और सुरत लगात ॥१२॥
गुन गाऊं तुम चरन धियाऊं ।
प्यारे राधास्वामी मेरे पित और मात ॥१३॥
दया दृष्टि से मोहिं निहारो ।
औगुन मेरे चित्त न लात ॥१४॥

॥ शब्द २८ ॥

सुरतिया झुरत रही ।
कस लगूं शब्द संग जाय ॥ १ ॥
नित फर्याद करूं सतगुर से ।
घट में दीजे दर्शन आय ॥ २ ॥

एक चित होय लगूं घट अंतर ।
शब्द अमीरस पिऊं अघाय ॥ ३ ॥
सुननहार नहिं सुनैं पुकारा ।
कैसी करूं मेरी कहा बसाय ॥ ४ ॥
रैन दिवस रहुं सोचत मन में ।
कस भौसागर पार पराय ॥ ५ ॥
बिरह अगिन मोहिं नित्त सतावे ।
बेकल रहूं मोहिं कछु न सुहाय ॥ ६ ॥
आस २ में बहु दिन बीते ।
योंही उमरिया बीती जाय ॥ ७ ॥
मन इंद्री संग जूझत रहती ।
बहु बिधि भय और आस दिखाय ॥ ८ ॥
काज बना नहिं पूरा अब तक ।
मन भी कुछ मेरे बस नहिं आय ॥ ९ ॥
जब तब माया ओर लुभावे ।
घट में चालन को अलसाय ॥१०॥
आस निरास संग दिन बीतत ।
मनहीं मन में रहूं अकुलाय ॥११॥

भूल चूक और कसर अनेका ।
सोचत मन में रहूं शरमाय ॥१२॥
बिन राधास्वामी कोइ और न दीसे ।
उनहीं से कहूं बिपत सुनाय ॥१३॥
मेहर दृष्टि से अब मोहिं हेरो ।
जल्दी देव निज शब्द सुनाय ॥१४॥
किरपा कर निज रूप दिखाओ ।
तब मन मेरा तृप्त अघाय ॥१५॥

॥ शब्द २९ ॥

सुरतिया परख परख ।
आज गुरु मत लीना चीन ॥ १ ॥
उमंग भरी सतसंग में आई ।
गुरु चरनन आधीन ॥ २ ॥
बचन सुनत बढ़ा भाव हिये में ।
तजत मान हुई दीन ॥ ३ ॥
भेद पाय मन उमंगा भारी ।
सुरत शब्द में लीन ॥ ४ ॥

सब मत खोज जांच लिया मन में ।
गुरु मत सांचा दीन ॥ ५ ॥
धुन की ख़बर पाय अब घट में ।
मन दृढ़ निश्चय कीन ॥ ६ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ी गुरु चरनन ।
तन मन वार धरीन ॥ ७ ॥
माया ममता झींक रहीं अब ।
काल हुआ ग़मगीन ॥ ८ ॥
पांच दूत गुरु बल बस कीने ।
थाक रहे गुन तीन ॥ ९ ॥
राधास्वामी की क्या महिमा गाऊं ।
लिया अपनाय मोहिं मिसकीन (अ) ॥१०॥
प्रेम रंग की बरखा कीनी ।
मन और सुरत हुए रंगीन ॥११॥
उमंग उमंग कर चढ़त अधर में ।
शब्द शब्द रस लीन ॥१२॥
सहसकंवल और गगन अटारी ।
सुन और महासुन्न लख लीन ॥१३॥

(अ) ग़रीब

भंवरगुफा होय चढ़ी अधर में।
सतपुर जाय सुनी धुन बीन ॥१४॥
सत्तपुरुष की आरत कीनी।
दई मेहर से मोहिं दुरबीन ॥१५॥
अलख अगम के पार गई अब।
मिल गये राधास्वामी गुरु परबीन ॥१६॥
राधास्वामी चरन सरन गह बैठी।
प्रीत लगी अब जस जल मीन ॥१७॥

॥ शब्द ३० ॥

सुरतिया निरख परख।
अब गुरु मत धारा आय ॥ १ ॥
खोजत रहो आद घर न्यारा।
ताकी बूझ कहीं नहिं पाय ॥ २ ॥
कोइ मूरत कोइ तीरथ गावें।
कोइ रहे करम धरम अटकाय ॥ ३ ॥
विद्या ज्ञानी ब्रह्म होय बैठे।
मन माया संग रहे लिपटाय ॥ ४ ॥

हठ जोगी बहु कष्ट उठाते।
जग को नए नए स्वांग दिखाय ॥ ५ ॥
मौनी जोगी जती सन्यासी।
निज घर का कोइ भेद न गाय ॥ ६ ॥
और अनेक मते जग माहीं।
परघट हुए समाज बनाय ॥ ७ ॥
करम धरम में भरम रहे सब।
सत मत का कोइ खोज न पाय ॥ ८ ॥
इन सब से मन होय निरासा।
संत मते का खोज लगाय ॥ ९ ॥
सतसंगी से मिला भाग से।
उन मोहिं दीना पता बताय ॥१०॥
सत मत सोई संत मत कहिये।
महिमा उसकी दई सुनाय ॥११॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे।
घट में उनका भेद जनाय ॥१२॥
प्रेम भक्ति सतगुरु की महिमा।
सुरत शब्द की जुगत लखाय ॥१३॥

कर अभ्यास मिला घट आनंद ।
तन मन दीनों शांत धराय ॥१४॥
राधास्वामी संगत में जाय मिलिया ।
सतसंग कर लिया भाग जगाय ॥१५॥
संसय भरम हुए सब दूरा ।
नई नई प्रीत प्रतीत जगाय ॥१६॥
प्रेम सहित नित जुगत कमाऊं ।
सेवा कर लिया गुरू रिझाय ॥१७॥
नित प्रति सुरत अधर में चढ़ती ।
नई नई लीला गुरू दिखाय ॥१८॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।
मेहर से लीना काज बनाय ॥१९॥

बिनती और प्रार्थना का अंग

॥ शब्द ३१ ॥

सुरतियां बिनय करत ।
गुरु चरनन में कर जोड़ ॥ १ ॥

शब्द भेद मोहिं खोल सुनाओ ।
धुन में लाग रहे चित मोर ॥ २ ॥
जगत भाव भय मन से टारो ।
छूटे मोर और तोर ॥ ३ ॥
घट में जाय परम सुख पाऊं ।
बाजे जहां नित अनहद घोर ॥ ४ ॥
दया करो मोहिं चरन लगाओ ।
हे राधास्वामी बंदीछोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुरतिया चाह रही ।
सतगुर से भक्ती दान ॥ १ ॥
उमंग अंग ले सन्मुख आई ।
गुरु चरनन में सुरत लगान ॥ २ ॥
भेद पाय सुनती अनहद धुन ।
गुरु सरूप का करती ध्यान ॥ ३ ॥
घट में देखत बिमल बिलासा ।
शब्दगुरू का पाया ज्ञान ॥ ४ ॥

प्रेम डोर गह चढ़ी अधर में ।
भंवरगुफा मुरली धुन गान ॥ ५ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पाया ।
सत्त शब्द का मिला ठिकान ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारी ।
होय गई अब अमन अमान ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

सुरतिया याच रही ।
गुरु चरन प्रेम की दात ॥ १ ॥
उमंग भरी गुरु सन्मुख आई ।
दरशन कर हिये में हुलसात ॥ २ ॥
सुन सुन बचन मगन हुई मन में ।
तोड़ा जग जीवन से नात ॥ ३ ॥
कृत संसारी अब नहिं भावे ।
करम धरम पर मारी लात ॥ ४ ॥
गुरु संग प्रीत लगावत ऐसी ।
जस बालक माता के साथ ॥ ५ ॥

बिन दरशन अब चैन न आवे।
और कहीं मन लगे न लगात॥ ६॥
नित अभ्यास करत धर ध्याना।
गुरु मूरत निज हिये बसात॥ ७॥
छिन छिन घट में दरस निहारत।
गुरु छबि देख चित्त मगनात॥ ८॥
रसक रसक सुनती अनहद धुन।
अमीं धार नित सुन से आत॥ ९॥
मन और सूरत चढ़त अधर में।
शब्द शब्द पौड़ी दरसात॥१०॥
अजब बिलास मिला अंतर में।
उमंग उमंग गुरु के गुन गात॥११॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे।
प्रेम सहित उन चरन समात॥१२॥

॥ शब्द ३४ ॥

सुरतिया साज रही।
गुरु आरत प्रेम सम्हार॥ १॥

बिरह भाव की थाली लाई ।
शब्द की जोत संवार ॥ २ ॥
उमंग जगाय चरन गुरु सेती ।
राधास्वामी नाम पुकार ॥ ३ ॥
बचन गुरू के हिये में गुनती ।
लख रही महिमां सार ॥ ४ ॥
अजब बिलास निरख घट माहीं ।
गावत गुन हर बार ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमां अकह अपारा ।
चरन सरन रही हिरदे धार ॥ ६ ॥
काल लगाई बहुतक लीकें ।
रोग दोख का किया पसार ॥ ७ ॥
मैं गुरु चरन पकड़ दृढ़ हिये में ।
रहूं राधास्वामी चरन अधार ॥ ८ ॥
मेहर करें काटें जंजाला ।
अपनी किरपा धार ॥ ९ ॥
नित प्रति बिनय करूं चरनन में ।
करो सहाय मेरी गुरु दातार ॥१०॥

दया धार मोहिं धीरज दीजे ।
घट में रहूं नित दरस निहार ॥११॥
राधास्वामी गुरु किरपाल दयाला ।
चरन लगाया मोहिं कर प्यार ॥१२॥

॥ शब्द ३५ ॥

सुरतिया सोच भरी ।
गुरु चरनन करत पुकार ॥१॥
जगत जाल जंजाल लगाया ।
नित्त करे मन उसकी कार ॥२॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे ।
क्योंकर होवे जीव उबार ॥ ३ ॥
रोग दुक्ख मोहिं नित्त सतावें ।
चिंता संग रहे मन बीमार ॥४॥
कैसी करूं कुछ बस नहिं चाले ।
गुरु बिन कौन करे निरबार ॥५॥
राधास्वामी चरनन करूं पुकारा ।
बेग लेव मोहिं अधम सुधार ॥ ६ ॥

मेहर दया से बिघन हटाओ ।
मन के देव बिकार निकार ॥ ७ ॥
सतसंग करूं प्रेम से निस दिन ।
भजन करूं मन सुरत सम्हार ॥ ८ ॥
मन और सुरत सिमट कर घट में ।
चढ़ कर देखें बिमल बहार ॥ ९ ॥
मैं अति दीन निबल नाकारा ।
सरन पड़ी अब सब बल हार ॥१०॥
मोपै मेहर दृष्टि अब कीजै ।
सहज उतारो भौजल पार ॥११॥
राधास्वामी बिन कोइ और न सूझे ।
राधास्वामी हैं मेरे कुल करतार ॥१२॥
बिनती सुनो दया कर प्यारे ।
काज करो मेरा किरपा धार ॥१३॥
नित नित मैं गुन गाऊं तुम्हारे ।
राधास्वामी २ रहूं पुकार ॥१४॥

॥ शब्द ३६ ॥

सुरतिया सेव करत ।
गुरु चरन हिये धर प्यार ॥ १ ॥
सतसंग करत कटे मन भरमा ।
देखी जग की किरत असार ॥ २ ॥
सतगुरु की महिमा मन मानी ।
गत मत शब्द अपार ॥ ३ ॥
बचन सुनत मन शांती आई ।
गुरु चरनन में जागा प्यार ॥ ४ ॥
दीन जान गुरु दिया उपदेशा ।
शब्द भेद निज सार ॥ ५ ॥
हित चित से अब करूं कमाई ।
मन और सुरत सम्हार ॥ ६ ॥
बिन किरपा कुछ काज न सरई ।
मेहर करो गुरु परम उदार ॥ ७ ॥
घेर फेर मन घट में लाओ ।
सुरत चढ़ाओ नौ के पार ॥ ८ ॥

घंटा संख सुनूं जाय नभ में ।
और लखूं वहां जोत उजार ॥ ९ ॥
बंकनाल धस निरखूं गुरु पद ।
सुनूं गरज संग धुन ओंकार ॥१०॥
सुन्न सिखर चढ़ महासुन्न लख ।
भंवरगुफा मुरली झनकार ॥११॥
सतपुर जाय सुनूं धुन बीना ।
दरस पुरुष का करूं सम्हार ॥१२॥
अलख अगम के लोक सिधारूं ।
सुनूं गुप्त धुन बानी सार ॥१३॥
आगे राधास्वामी चरन निहारूं ।
प्रेम सहित रहूं आरत धार ॥१४॥
मेहर दया राधास्वामी पाई ।
मगन होय बैठी सरन सम्हार ॥१५॥

॥ शब्द ३७ ॥

सुरतिया मचल रही ।
गुरु चरन पकड़ हठ नाल ॥ १ ॥

बिनती करत दोऊ कर जोड़ी ।
हे राधास्वामी परम दयाल ॥ २ ॥
मेहर करो अबही दिखलाओ ।
निज सरूप का दरस बिशाल ॥ ३ ॥
मन इंद्री बहु बिघन लगाते ।
काट देव उन का जंजाल ॥ ४ ॥
नाम खड़ग ले चढ़ूं गगन पर ।
मारूं दल माया और काल ॥ ५ ॥
घंटा संख सुनूं धुन नभ में ।
देखूं सुंदर जोत जमाल ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय ओअं धुन पाऊं ।
चमक रहा जहां सूरज लाल ॥ ७ ॥
अधर जाय तिरबेनी न्हाऊं ।
सुनूं सुन्न में शब्द रसाल ॥ ८ ॥
महासुन्न होय पहुंच गुफा में ।
महाकाल का काटूं जाल ॥ ९ ॥
सतपुर जाय सुनूं धुन बीना ।
दरस पुरुष का पाऊं हाल ॥१०॥

अलख अगम का शब्द जगाऊं।
गाऊं गुन सतगुरू दयाल ॥११॥
राधास्वामी चरन परस कर।
करूं आरती होउं निहाल ॥१२॥
यह बिनती मेरी अब मानो।
कीजे मेरी आप सम्हाल ॥१३॥
घट में दरस दिखा कर अपना।
जल्दी मुझको लेव निकाल ॥१४॥
छिन छिन राधास्वामी चरन धियाऊं।
रहे नहीं कोइ और ख़याल ॥१५॥
प्रेम सिंध में पहुंच दया से।
पाऊं प्रेम रूप धन माल ॥१६॥
जो मांगा सो बख़्शिश दीजे।
राधास्वामी कीजे मेहर कमाल ॥१७॥

॥ शब्द ३८ ॥

सुरतिया मांग रही।
सतगुरु से मेहर की दात ॥ १ ॥

दीन होय आई राधास्वामी चरना ।
चित से सुनती गुरु मुख बात ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा ।
समझ समझ हरखात ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत जगावत मन में ।
चरन सरन पर हिया उमगात ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग की महिमा ।
सुन सुन हियरे उमंग बढ़ात ॥ ५ ॥
नित अभ्यास नेम से करती ।
मगन होत घट में धुन पात ॥ ६ ॥
माया काल पेच बहु डाले ।
चिंता बैरन बिघन लगात ॥ ७ ॥
अनेक भांत की खटक हिये में ।
सालत रहै दिन रात ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरनन करत पुकारा ।
मेरा बल कुछ पेश न जात ॥ ९ ॥
अरज़ी करत बहुत दिन बीते ।
अब तो धरो मेहर का हाथ ॥१०॥

कारज मेरे आप संवारो ।
दीन दयाल दया के साथ ॥११॥
तब मन निश्चल सुर्त होय निरमल ।
धुन रस और रूप रस पात ॥१२॥
हरख हरख फिर चढ़ें अधर में ।
होय करम की बाज़ी मात ॥१३॥
निरख जोत लख सूर प्रकाशा ।
चंद्र चांदनी चौक समात ॥१४॥
मुरली धुन और बीन बजावत ।
अलख अगम के चरन परात ॥१५॥
राधास्वामी धाम धाय धुन सुन सुन ।
अचरज रूप निरख मुसकात ॥१६॥
अभेद आरती राधास्वामी कीनी ।
मेहर पाय निज भाग सरात ॥१७॥
राधास्वामी महिमा अति से भारी ।
को बरने को करे बिख्यात ॥१८॥
भूल चूक मेरी चित नहिं धारी ।
राधास्वामी दाता दया करात ॥१९॥

सेवा का अंग

॥ शब्द ३९ ॥

सुरतिया सेव करत ।
गुरु भक्तन की दिन रात ॥ १ ॥
सब का काम काज नित करती ।
आलस नेक न लात ॥ २ ॥
चाह संवार मेल नित करती ।
जैसे छीर शकर के साथ ॥ ३ ॥
छांट बचन सतगुरु के सारा ।
धर मन में हरखात ॥ ४ ॥
डोलत फिरत जपत गुरु नामा ।
रूप सोहावन हिये बसात ॥ ५ ॥
भजन नेम से करती घट में ।
शब्द सुनत मगनात ॥ ६ ॥
कुल परिवार संग ले अपने ।
राधास्वामी सरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४० ॥

सुरतिया खड़ी रहे।
नित सेवा में गुरु पास ॥ १ ॥
चरन दबावत पंखा फेरत।
धर मन में बिस्वास ॥ २ ॥
ब्यंजन अनेक बनाय प्रीत से।
लावत गुरु के पास ॥ ३ ॥
जब सतगुरु ने भोग लगाया।
परशादी ले बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
अमी रूप जल लाय पिलावत।
सुख अमृत पी बुझत पियास ॥ ५ ॥
नाम गुरू हिरदे में धारा।
जपती स्वांसो स्वांस ॥ ६ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत।
निरख रही घट में परकाश ॥ ७ ॥
राधास्वामी आरत नित नित गाऊं।
दीन्हा मुझको चरन निवास ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

सुरतिया फूल रही ।
सतगुर के दरशन पाय ॥ १ ॥
भाव भक्ति से पूजा करती ।
मत्था टेक चरन परसाय ॥ २ ॥
गंध सुगंध फूल की माला ।
सतगुर गल पहिनाय ॥ ३ ॥
अमृत रस जल भर के लाई ।
चरनामृत कर पियत अघाय ॥ ४ ॥
मुख अमृत बिनती कर लेती ।
उमंग सहित हिये प्यास बुझाय ॥ ५ ॥
ब्यंजन अनेक प्रीत कर लाई ।
गुरु सन्मुख धरे थाल भराय ॥ ६ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत करती ।
दृष्टि से दृष्टि मिलाय ॥ ७ ॥
सतगुरु दया दृष्टि जब डारी ।
मगन होय रही उन गुन गाय ॥ ८ ॥

सब सतसंगी और सतसंगिन ।
दृष्टि जोड़ दरशन रस पाय ॥ ९ ॥
बटा परशाद हरख हुआ भारी ।
सब मिल गुरु परशादी पाय ॥१०॥
कभी कभी अस औसर भल पावत ।
सब मिल राधास्वामी चरन धियाय ॥११॥

॥ शब्द ४२ ॥

सुरतिया ध्यान धरत ।
गुरु रूप चित्त में लाय ॥ १ ॥
सेवा करत मानसी गुरु की ।
मन में नित नया भाव जगाय ॥ २ ॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में ।
बटना मल अशनान कराय ॥ ३ ॥
बस्तर भाव प्रीत पहिना कर ।
चंदन केसर तिलक लगाय ॥ ४ ॥
पलंग बिछाय बिठावत गुरु को ।
उमंग उमंग उन आरत गाय ॥ ५ ॥

ताक नैन गुरु दरशन करती ।
दृष्टि समेट मद्ध तिल लाय ॥ ६ ॥
हरखत मन अस जुगत सम्हारत ।
सुनत शब्द अति आनंद पाय ॥ ७ ॥
कोइ दिन अस मन चित ठहरावत ।
सहज सरूप और धुन रस पाय ॥ ८ ॥
नित प्रति भजन ध्यान अस करती ।
सुरत चढ़ी अब घट में धाय ॥ ९ ॥
शब्द शब्द धुन सुनत अधर में ।
राधास्वामी चरनन पहुंची जाय ॥१०॥
मेहर दया राधास्वामी की पाई ।
तब अस कारज लिया बनाय ॥११॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरतिया टहल करत ।
सतसंग में धर कर भाव ॥ १ ॥
प्रेमी जन की दया पाय कर ।
दिन दिन बाढ़त चाव ॥ २ ॥

मन मलीन फिर फिर भरमावत।
दया मेहर से खावत ताव ॥ ३ ॥
रूखा फीका होय सेवा में।
फिर फिर मनही मन पछताव ॥ ४ ॥
बहु बिध समझौती ले घट में।
आलस तज नया चाव बढ़ाव ॥ ५ ॥
आस बास धारी गुरु चरना।
अब कभी नहिं मन जाय भुलाव ॥ ६ ॥
छोड़ कपट सच्चा होय बरते।
संसै भरम न चित्त समाव ॥ ७ ॥
दया होय मुझ पर अब ऐसी।
माया संग नहिं जाय लुभाव ॥ ८ ॥
सतसंग बचन सुनूं चित देकर।
ध्यान भजन में कुछ रस पाव ॥ ९ ॥
मौज अनुसार चले फिर सीधा।
जग का भाव न चित्त समाव ॥१०॥
राधास्वामी दीन दयाल मेहर से।
चरनन में मोहिं नित्त लगाव ॥११॥

सरन का अंग

॥ शब्द ४४ ॥

सुरतिया निडर हुई।
राधास्वामी सरन सम्हार ॥ १ ॥
दृढ़ परतीत चरन में लाई।
धर हिरदे में प्यार ॥ २ ॥
चरन ओट गह खेलत जग में।
सुमिर सुमिर गुरु नाम दयार ॥ ३ ॥
लीला देख हरखती मन में।
गुरु दरशन की निरख बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब हिये बसाये।
घट में करती सहज दीदार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

सुरतिया रीझ रही।
गुरु अचरज दरस निहार ॥ १ ॥

दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सुन गुरु बचन फूल रही तन में ।
शब्द की लीनी जुगती सार ॥ ३ ॥
भजन करत परतीत बढ़ावत ।
ध्यान धरत हिये बाढ़ा प्यार ॥ ४ ॥
सुरत हुई अब धुन रस माती ।
गुरु सरूप रस मन सरशार ॥ ५ ॥
बिरह जगावत प्रेम बढ़ावत ।
गुरु गुन गावत बारम्बार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर की भारी ।
सहज लिया मोहिं अधम उबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

सुरतिया बांह गही ।
सतगुरु की सब बल त्याग ॥ १ ॥
मान बड़ाई जगत बासना ।
तज गुरु चरनन लाग ॥ २ ॥

भेद पाय निज नाम सम्हाला ।
सुमिर सुमिर रही जाग ॥ ३ ॥
भजन करत निस दिन रस पावत ।
सुनत रागनी और धुन राग ॥ ४ ॥
करम धरम से नाता टूटा ।
छोड़ दई अब माया आग ॥ ५ ॥
त्रिकुटी होय सुन्न में पहुंची ।
छूट गई संगत मन काग ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सम्हारे ।
जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

सुरतिया ओट गही ।
सतगुरु की धर परतीत ॥ १ ॥
करम भरम तज सरन लई अब ।
छोड़ी जग की चाल अनीत ॥ २ ॥
सतसंग करत भाव नया जागत ।
दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥ ३ ॥

कर अभ्यास सुरत मन मांजत ।
दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतीत ॥ ४ ॥
धुन रस पाय हरखती मन में ।
रही सरावत भाग अजीत ॥ ५ ॥
जग परमारथ देख असारा ।
धार लई गुरु भक्ती रीत ॥ ६ ॥
संत मते की महिमां जानी ।
गाय रही नित राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

सुरतिया दीन दिल ।
आज आई सरन गुरु धाय ॥ १ ॥
परमारथ की अति कर प्यासी ।
बचन सुनत रस पाय ॥ २ ॥
भर भर प्रेम करत गुरु दरशन ।
सेवा करत हिया उमगाय ॥ ३ ॥
सतसंग कर नित प्रीत बढ़ावत ।
गुरु चरनन संग रहे लिपटाय ॥ ४ ॥

सुमिरन ध्यान भजन नित करती।
प्रीत सहित गुरु बचन कमाय ॥ ५ ॥
दिन दिन आनंद बढ़त हिये में।
उमंग उमंग नई प्रीत जगाय ॥ ६ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझावत।
दिन दिन होत मेहर अधिकाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

सुरतिया भाव सहित।
नित गुरु का भोग बनाय ॥ १ ॥
उमंग सहित नित थाल सजावत।
नये नये ब्यंजन लाय ॥ २ ॥
भोजन अधिक रसीले लागें।
नित प्रति स्वाद अधिकाय ॥ ३ ॥
गुरु सतसंगी सब मिल पावत।
मन में अधिक हरखाय ॥ ४ ॥
अस अस भाव और प्यार निहारत।
भक्ति दान दिया दया उमगाय ॥ ५ ॥

प्रीत प्रतीत चरन में बढ़ती।
मन और सुरत नाम धुन गाय ॥ ६ ॥
नाम जपत अब होत सफ़ाई।
शब्द भेद दिया गुरु समझाय ॥ ७ ॥
भजन और ध्यान करत नित घट में।
अंतर शब्द प्रकाश दिखाय ॥ ८ ॥
मगन होय अब धुन रस पावत।
चरन सरन रही हिये बसाय ॥ ९ ॥
राधास्वामी गुरु अब हुए दयाला।
मेहर से दीना काज बनाय ॥१०॥

॥ शब्द ५० ॥

सुरतिया रटत रही।
पिया प्यारा नाम सही ॥ १ ॥
उमंग भरी सतसंग में आई।
मान लाज दोउ त्याग दई ॥ २ ॥
समझ बूझ गुरु बचन सम्हारे।
गुरु चरनन की टेक गही ॥ ३ ॥

सार भेद ले करत कमाई ।
शब्द अमीरस चाख रही ॥ ४ ॥
गुरु चरनन में किया बिस्वासा ।
दिन दिन जागत प्रीत नई ॥ ५ ॥
गुरु दरशन अस प्यारा लागे ।
जस माता को पुत्र कही ॥ ६ ॥
बिन दरशन व्याकुल रहे तन में ।
दरस पाय जब मगन भई ॥ ७ ॥
ऐसी लगन देख गुरु प्यारे ।
निज चरनन की सरन दई ॥ ८ ॥
सरन पाय अब हुई अचिंती ।
दिन दिन प्रेम जगाय रही ॥ ९ ॥
गुरु परताप सुरत अब चेती ।
शब्द संग चढ़ अधर गई ॥१०॥
राधास्वामी चरनन जाय मिली अब ।
महिमां उसकी कौन कही ॥११॥

॥ शब्द ५१ ॥

सुरतिया सरन गही ।
लख राधास्वामी गत भारी ॥ १ ॥
भाग जगे गुरु सतसंग पाया ।
बचन अमोल चित्त धारी ॥ २ ॥
गुरु का रूप बसाय हिये में ।
निरख रही घट उजियारी ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब दिन दिन ।
भींज गई गुरु रंग सारी ॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
त्याग दिया जग ब्यौहारी ॥ ५ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ावत ।
सुन रही अनहद झनकारी ॥ ६ ॥
लख गुरु मेहर हरख हिये अंतर ।
चरनन पर तन मन वारी ॥ ७ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
होय गई मैं पिया प्यारी ॥ ८ ॥

राधास्वामी दया सहसदल पाया ।
सुनी अधर धुन ओंकारी ॥ ९ ॥
चंद्र मंडल लख भंवरगुफा चढ़ ।
सुनी बीन धुन निज सारी ॥१०॥
अलख अगम की मेहर पाय कर ।
धाम अनामी पग धारी ॥११॥
अचरज रूप निरख हुलसानी ।
राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥१२॥

॥ शब्द ५२ ॥

सुरतिया सरन पड़ी ।
गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
दरशन कर हिये में मगनानी ।
जस बालक माता संग प्यार ॥ २ ॥
आस भरोस धरा चरनन में ।
जियत रहूं गुरु चरन अधार ॥ ३ ॥
बिन गुरु चरन रहे व्याकुल मन ।
पियत रहूं चरनन रस सार ॥ ४ ॥

अद्भुत छबि गुरु की मन भाई ।
निरखत रहूं दरस गुरु सार ॥ ५ ॥
तोड़ दिये अब सब बल मन के ।
धार रही गुरु टेक सम्हार ॥ ६ ॥
सेवा करत फूलती तन में ।
हाज़िर रहूं नित गुरु दरबार ॥ ७ ॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी ।
त्याग दिये सब जान लबार ॥ ८ ॥
गुरु की दया धार हिये छिन छिन ।
जीत लिया दल माया नार ॥ ९ ॥
परमारथ स्वारथ कारज में ।
मौज गुरू की रहूं सम्हार ॥१०॥
सुक्ख दुःख जब मौज से ब्यापें ।
शुकर करूं रहूं गुरु को धार ॥११॥
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होई ।
गुरु ही हैं मेरे कुल करतार ॥१२॥
अचरज खेल देख अब घट में ।
त्याग दिया जग काल पसार ॥१३॥

उमंग उमंग स्रुत चढ़त अधर में ।
निरख रही कंवलन फुलवार ॥१४॥
राधास्वामी सतगुर प्यारे ।
छिन छिन रहूं उन शुकरगुज़ार ॥१५॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द ५३ ॥

सुरतिया चुप्प रही ।
देख अचरज लीला सार ॥ १ ॥
प्रीत सहित गुरु के ढिंग आती ।
दरशन करत सम्हार ॥ २ ॥
आरत कर निज भाग जगाती ।
प्रेम भक्ति का थाल संवार ॥ ३ ॥
सीत प्रशाद उमंग कर लेती ।
करम भरम का भार उतार ॥ ४ ॥
मेहर दया राधास्वामी की पाई ।
होय गई उन सरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

सुरतिया खिलत रही।
गुरु अचरज दरशन पाय ॥ १ ॥
गुरु छबि अजब नैन भर देखत।
बाढ़ा आनंद हिये न समाय ॥ २ ॥
धुन झनकार अधर से आवत।
अमीधार चहुं दिस बरखाय ॥ ३ ॥
नूर हिये में अद्भुत जागा।
सोभा वाकी बरनी न जाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर की भारी।
अस लीला दई मोहिं दरसाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सुरतिया देख रही।
सतगुरु का मोहन रूप ॥ १ ॥
सुरत शब्द की महिमां सुन सुन।
धारी जुगत अनूप ॥ २ ॥

शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
छोड़ दिया भौ कूप ॥ ३ ॥
काल देस के परे सिधारी ।
छोड़ी छांह और धूप ॥ ४ ॥
राधास्वामी दरस निहारा ।
जहां रेखा नहिं रूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

सुरतिया फड़क रही ।
सुन सतगुरु बानी सार ॥ १ ॥
राग रागिनी धुन संग गावत ।
जागत प्रेम पियार ॥ २ ॥
घट में नित प्रति करती फेरा ।
लीला अजब निहार ॥ ३ ॥
गुरु पद परस चढ़ी ऊंचे को ।
सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारे ।
हुई उन पर बलिहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

सुरतिया केल करत ।
घट शब्द धुनन के संग ॥ १ ॥
अधर चढ़त सुत हुई मतवाली ।
भींज रही रस रंग ॥ २ ॥
हंसन संग करत नित केला ।
छोड़ा जगत कुरंग ॥ ३ ॥
घट में पाया बिमल बिलासा ।
रहे नित गुरु के संग ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन परस मगनानी ।
प्रीत बसी अंग अंग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

सुरतिया चाख रही ।
घट शब्द अमीं रस सार ॥ १ ॥
सतगुरु दया निरख रही नभ में ।
झिलमिल जोत उजार ॥ २ ॥

देख गगन में सूर प्रकाशा।
चंद्र चांदनी दसवें द्वार ॥ ३ ॥
भंवरगुफा सोहंग धुन पाई।
पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम अनूपा।
निरखा अचरज रूप अपार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

सुरतिया सज धज से आई।
चलन को सतगुर देस ॥ १ ॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत।
तज दिया माया लेस ॥ २ ॥
सुरत शब्द गह चढ़ती सुन में।
धारा हंसा भेस ॥ ३ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख।
जहां न काल कलेश ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन जाय कर परसे।
पाया पूरन ऐश ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६० ॥

सुरतिया लाय रही ।
गुरु चरनन प्यार ॥ १ ॥
उमंग सहित नित दरशन करती ।
पहिनाती गल हार ॥ २ ॥
भाव संग परशादी लेती ।
पियत चरन रस सार ॥ ३ ॥
व्यंजन अनेक थाल भर लाई ।
आरत गावत सन्मुख ठाढ़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करी अंतर में ।
निरखा घट उजियार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

सुरतिया गाय रही ।
राधास्वामी नाम अपार ॥ १ ॥
दरशन कर गुरु सेवा करती ।
धर चरनन में प्यार ॥ २ ॥

लीला देख हरखती मन में ।
गुरु परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
मगन होत सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मगन होय कर ।
दीना चरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

सुरतिया परस रही ।
राधास्वामी चरन अनूप ॥ १ ॥
बिरह अंग ले सन्मुख आई ।
मगन हुई लख अचरज रूप ॥ २ ॥
करम जलावत भाग सरावत ।
त्याग दिया अब भौजल कूप ॥ ३ ॥
अधर चढ़त सुन गगन सिधारी ।
लखा जाय तिर्लोकी भूप ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर धर ध्याना ।
निरख रही घट बिमल सरूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

सुरतिया दमक रही ।
चढ़ घट में नभ के द्वार ॥ १ ॥
जोत उजार छिटक रहा सुन में ।
घंटा संख धूम अति डार ॥ २ ॥
सूरज चांद अनेकन देखे ।
फूल रही अद्भुत फुलवार ॥ ३ ॥
आगे चढ़ पहुंची गगनापुर ।
उठत नाद जहां बानी सार ॥ ४ ॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

सुरतिया धार रही ।
गुरु आरत प्रेम जगाय ॥ १ ॥
बस्तर भूखन बहु पहिनाती ।
नई नई सोभा देख हरखाय ॥ २ ॥

अनहद धुन घट शोर मचाया ।
घंटा संख मृदंग बजाय ॥ ३ ॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये ।
नाचें गावें उमंग बढ़ाय ॥ ४ ॥
प्रेम घटा घट उमड़त आई ।
अमीं धार चहुंदिस बरखाय ॥ ५ ॥
नूर पुरुष का घट में जागा ।
कोट सूर और चन्द्र लजाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब सब पर ।
चरन सरन दे लिया अपनाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

सुरतिया निरख रही ।
घट अंतर शब्द प्रकाश ॥ १ ॥
चित रहे दीन लीन गुरु चरनन ।
जग संग रहत उदास ॥ २ ॥
गुरु की दया परख कर मन में ।
गावत गुन निस बास ॥ ३ ॥

गुरु की मूरत हिये बसाई ।
निस दिन रहे गुरु पास ॥ ४ ॥
मन और सुरत जमावत तिल में ।
धावत अधर अकास ॥ ५ ॥
जोत रूप लख चढ़त गगन पर ।
सुन्न में पाया अगम निवास ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करी अब मुझ पर ।
घट में दीना परम बिलास ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

सुरतिया हरख रही ।
आज गुरु छबि देख नई ॥ १ ॥
ज़ेवर कपड़े लाय अनेका ।
कर सिंगार रही ॥ २ ॥
मसनद तकिया लाय पलंग पर ।
गुरु को बिठाय दई ॥ ३ ॥
मोतियन की अब लड़ियां पोह कर ।
थाल सजाय लई ॥ ४ ॥

फूलन के गल हार पहिना कर ।
गुरु के चरन पई ॥ ५ ॥
ले थाली गुरु आरत गावत ।
चहुं दिस हरख अनंद भई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर ।
दीना नाम सही ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

सुरतिया ध्याय रही ।
हिये में गुरु रूप बसाय ॥ १ ॥
दृष्टि जोड़ कर धरती ध्याना ।
मन में प्रेम जगाय ॥ २ ॥
मन और सुरत सिमट नभ दूवारे ।
तन से रही अलगाय ॥ ३ ॥
आनंद अधिक पाय अब दिन २ ।
गुरु चरनन में रही लिपटाय ॥ ४ ॥
धुन की धार अधर से आवत ।
पी पी रस हरखाय ॥ ५ ॥

निरखत घट में बिमल प्रकाशा ।
सूर चांद जहां रहे लजाय ॥ ६ ॥
छिन छिन राधास्वामी के गुन गावत ।
चरन ओट ले सरन समाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

सुरतिया खेल रही ।
गुरु चरनन पास ॥ १ ॥
हरख हरख करती गुरु दरशन ।
देखत नित्त बिलास ॥ २ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी ।
बाढ़त नित्त हुलास ॥ ३ ॥
सेवा करत उमंग कर गुरु की ।
धर हिरदे बिस्वास ॥ ४ ॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
देखा घट परकाश ॥ ५ ॥
उमंग २ करती गुरु ध्याना ।
सुनती घट में अमर अवास ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह बैठी ।
सब से होय उदास ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९९ ॥

सुरतिया सील भरी ।
आज करत गुरू संग हेत ॥ १ ॥
जग ब्योहार त्याग दिया मन से ।
सुनत बचन गुरु चेत ॥ २ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
भजन ध्यान रस लेत ॥ ३ ॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत ।
मन माया को डाला रेत ॥ ४ ॥
गुरु किरपा तज श्याम धाम को ।
सुरत लगाय रही पद सेत ॥ ५ ॥
सो पद दिया मेहर से गुरु ने ।
बेद पुकार रहा तिस नेत ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीन अधीन निरख मोहिं ।
चरनन रस अब छिन २ देत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७० ॥

सुरतिया मांग रही ।
सतगुरु से अचल सुहाग ॥ १ ॥
दया धार सतगुरु मोहिं भेंटे ।
जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ २ ॥
गहिरी प्रीत लगी उन चरनन ।
जगत मोह टूटा ज्यों ताग ॥ ३ ॥
निज घर का मोहिं भेद सुनाया ।
सुरत उठी अब धुन संग जाग ॥ ४ ॥
उमंग अंग ले चढ़त अधर में ।
छूटा मन का द्वेष और राग ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन पहुंची दस द्वारे ।
काल देस अब दीना त्याग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया गई निज घर में ।
बैठ रही उन चरनन लाग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

सुरतिया प्यार करत ।
सतगुरु से हिये धर भाव ॥ १ ॥
जगत प्रीत तज तन मन वारत ।
अस न मिलै फिर दाव ॥ २ ॥
भेद पाय सुत अधर चढ़ावत ।
निरख उजार बढ़त घट चाव ॥ ३ ॥
सतगुरु चरन प्रेम नया जागा ।
सहती बिरहा ताव ॥ ४ ॥
करम धरम सब छोड़े छिन में ।
माया काल दोऊ हट जाव ॥ ५ ॥
सुनत नाद चाली गगनापुर ।
वहां से सूरत अधर लगाव ॥ ६ ॥
सत्त शब्द से जाय मिली अब ।
आगे राधास्वामी चरन समाव ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७२ ॥

सुरतिया प्रेम सहित ।
अब करती गुरु सतसंग ॥ १ ॥
बाली भोली सरना आई ।
धार ग़रीबी अंग ॥ २ ॥
राधास्वामी नाम सुमिरती हित से ।
मन की रोक तरंग ॥ ३ ॥
सतसंग बचन धारती हिये में ।
होवत संसय भंग ॥ ४ ॥
ध्यान धरत निरखत परकाशा ।
धारा रंग बिरंग ॥ ५ ॥
दिन दिन घट में होत सफ़ाई ।
छूटे सबही कुरंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर से अपनी ।
मोहिं सिखाया भक्ती ढंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

सुरतिया सींच रही।
गुरु चरन प्रीत फुलवार ॥ १ ॥
दरशन कर गुरु सेवा करती।
उमंग २ धर प्यार ॥ २ ॥
सतसंग बचन सम्हारत मन में।
कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥
सार धार नित करती करनी।
रहनी सुमत सुधार ॥ ४ ॥
चरन गुरू अब दृढ़ कर पकड़े।
हिरदे सरन सम्हार ॥ ५ ॥
मन और सुरत लगे घट अंतर।
सुन सुन धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ाई।
पहुंच गई सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

सुरतिया पूज रही।
गुरु चरन बिरह धर चीत ॥ १ ॥
समझ बूझ सतसंग के बचना।
धारी भक्ती रीत ॥ २ ॥
जग जीवन की परख पिरीती।
गुरु को माना सच्चा मीत ॥ ३ ॥
निरख परख सतगुरु की लीला।
धरी हिरदे परतीत ॥ ४ ॥
नित २ घट में प्यार बढ़ावत।
गुरु भक्तन संग लेती सीत ॥ ५ ॥
जग जीवन से मेल न रखती।
सतसंगियन से करती प्रीत ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करत अब घट में।
बूझी सतसंग नीत ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया मांगती हर दम।
देव मिटाय सकल भ्रम भीत ॥ ८ ॥

राधास्वामी आरत करत प्रेम से ।
जाऊं निज घर भौजल जीत ॥ ९ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

सुरतिया प्रीत करत ।
सतगुरु से भाव जगाय ॥ १ ॥
हित चित से गुरु दरशन करती ।
बचन सुनत मन लाय ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन छिन ।
गुरु सरूप रही हिये बसाय ॥ ३ ॥
सतसंगियन से हेल मेल कर ।
गुरु सेवा को हित से धाय ॥ ४ ॥
आरत करत प्रेम से पूरी ।
गुरु छबि देख अधिक हुलसाय ॥ ५ ॥
दया मेहर सतगुरु की परखत ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ६ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।
गगन मंडल में पहुंची धाय ॥ ७ ॥

सत्त पुरुष के चरन परस के ।
राधास्वामी लिये मनाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७६ ॥

सुरतिया मेल करत ।
गुरु भक्तन से धर प्यार ॥ १ ॥
मदद लेय उन सब की मिल कर ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
मांगे शब्द का भेद अपार ॥ ३ ॥
लख अनुराग गुरू दातारा ।
नाम भेद दिया सब का सार ॥ ४ ॥
मेहर करी गुरु लिया अपनाई ।
निरखा घट में शब्द उजार ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन स्रुत चढ़ी अधर में ।
घंटा सुन गई नौ के पार ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय ओं धुन पाई ।
सतपुर सुनी बीन धुन सार ॥ ७ ॥

राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में ।
अलख अगम के हो गई पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सुरतिया आन पड़ी ।
सतसंग में तज घर बार ॥ १ ॥
सतसंगियन से हिल मिल चालत ।
गुरु से बढ़ावत दिन दिन प्यार ॥ २ ॥
बिरह अनुराग धार हिये अंतर ।
छोड़े जग के भोग असार ॥ ३ ॥
भेद पाय धर गुरु परतीती ।
निस दिन करत अभ्यास सम्हार ॥ ४ ॥
मन और सुरत चढ़ावत घट में ।
पकड़ शब्द की धार ॥ ५ ॥
कथनी बदनी त्याग दीन चित ।
रहनी रहत भक्त अनुसार ॥ ६ ॥
नित नई दया परख सतगुरु की ।
देखत घट में बिमल बहार ॥ ७ ॥

हंस रूप होय अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरन मिला आधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७८ ॥

सुरतिया धोय रही ।
अब चूनर मैल भरी ॥ १ ॥
भाव भरी सतसंग में आई ।
गुरु चरनन सुत जोड़ धरी ॥ २ ॥
बचन सुनत अनुराग बढ़ावत ।
सेवा को नित रहत खड़ी ॥ ३ ॥
गुरु की दया मैल मन धोवत ।
निरमल होय भव सिंध तरी ॥ ४ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
चढ़ पहुंची पद परस हरी ॥ ५ ॥
गगन जाय परसे गुरु चरना ।
दसम द्वार गई होय छड़ी ॥ ६ ॥
सतगुरु दरस मिला सतपुर में ।
सुफल हुई अब देह नरी ॥ ७ ॥

अलख अगम की फिर सुध लेकर ।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७९ ॥

सुरतिया निरत करत ।
गुरु सन्मुख कर सिंगार ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत का ज़ेवर पहिना ।
भाव भक्ति के बस्तर धार ॥ २ ॥
अधर चढ़त धुन सुन स्रुत प्यारी ।
मस्त हुई सुन सारंग सार ॥ ३ ॥
हंस हंसनी संग जुड़ मिल कर ।
नाचत गावत उमंग सम्हार ॥ ४ ॥
अजब समा अचरज यह औसर ।
आनंद बरस रहा दस द्वार ॥ ५ ॥
बिना भाग बिन राधास्वामी किरपा ।
कौन लखे यह बिमल बहार ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली ।
बीन बजे सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥

सत्त धज के सुत अधर सिधारो ।
राधास्वामी चरन मिले निज सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८० ॥

सुरतिया भाग भरी ।
आज गुरु दरशन रस लेत ॥ १ ॥
जगत राग तज भाव हिये धर ।
गुरु संग करती हेत ॥ २ ॥
सतगुरु बचन अधिक मन भाये ।
सुनती चित से चेत ॥ ३ ॥
उमंग उमंग कर तन मन धन को ।
वार चरन पर देत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु जुगत कमाती ।
डारत मन की रेत ॥ ५ ॥
चित में धर बिस्वास गुरू का ।
जीत काल से खेत ॥ ६ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
तजत श्याम पहुंची पद सेत ॥ ७ ॥

सब मत के सिद्धांत अस्थाना ।
रह गये नीचे ब्रह्म समेत ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सम्हारत ।
पाय गई घर अद्भुत नेत ॥ ९ ॥

॥ शब्द ८१ ॥

सुरतिया अभय हुई ।
घट में गुरु दरशन पाय ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन ।
सुरत शब्द की जुगत कमाय ॥ २ ॥
चढ़त अधर पहुंची नभपुर में ।
धुन घंटा और संख सुनाय ॥ ३ ॥
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीना ।
अनहद धुन मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
गुरु सरूप के दरशन कीने ।
माया काल रहे मुरझाय ॥ ५ ॥
कंवलन की फुलवार खिलानी ।
सूरज चांद अनेक दिखाय ॥ ६ ॥

ऊपर चढ़ पहुंची दस द्वारे।
हंसन संग मिली अब आय ॥ ७ ॥
तीन लोक के हो गई पारा।
निरभय हुई सुन धुन रस पाय ॥ ८ ॥
दया मेहर से यह पद पाया।
राधास्वामी लीना मोहिं अपनाय ॥ ९ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

सुरतिया छान रही।
अब गुरु मत कर सतसंग ॥ १ ॥
बचन सुनत नित करत बिचारा।
होवत संशय भंग ॥ २ ॥
भेद समझ नित करत कमाई।
जोड़ सुरत धुन संग ॥ ३ ॥
जो कुछ बचन कहे संतन ने।
घट में परख रही अंग अंग ॥ ४ ॥
शब्द बिलास निरख हिये अंतर।
धारा सत गुरु रंग ॥ ५ ॥

प्रेम बढ़त दिन दिन गुरु चरना ।
मन इच्छा हुए सहज अपंग ॥ ६ ॥
सुरत हुई अब धुन रस माती ।
चढ़त अधर जस चंग ॥ ७ ॥
सहस कंवल होय त्रिकुटी धाई ।
सुन्न गई तज काल कुरंग ॥ ८ ॥
भंवरगुफा का लखा उजाला
सतपुर पहुंची होय निहंग ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया गई धुर धामा ।
धारा अद्भुत सहज सुरंग ॥१०॥

॥ शब्द ८३ ॥

सुरतिया भजन करत ।
हुई घट में आज निहाल ॥ १ ॥
सतगुरु बचन धार हिये अंतर ।
सुनत शब्द धुन सुरत सम्हाल ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत गुरू चरनन में ।
नित्त बढ़ावत होय खुश हाल ॥ ३ ॥

जगत किरत से हुई उदासा।
छिन छिन सुमिरत गुरू दयाल ॥ ४ ॥
उमंग उमंग गुरु सतसंग चाहत।
तोड़ फोड़ सब माया जाल ॥ ५ ॥
बिघन लगाय काल उलझावत।
काम क्रोध की डारत पाल ॥ ६ ॥
मैं राधास्वामी बल हिये धर अपने।
मन इच्छा की मारूं हाल ॥ ७ ॥
मेहर बिना कुछ बन नहिं आवे।
दया करो राधास्वामी कृपाल ॥ ८ ॥
करम काट सुत अधर चढ़ाओ।
दूर करो यह सब जंजाल ॥ ९ ॥
दीन होय तुम सरना आई।
राधास्वामी करो मेरी प्रतिपाल ॥१०॥

॥ शब्द ८४ ॥

सुरतिया मान रही।
गुरू बचन सम्हार सम्हार ॥ १ ॥

सतसंग करत नित्त हित चित से।
चुन चुन बचन हिरदे में धार ॥ २ ॥
सेवा करत उमंग से निस दिन।
गुरु सतसंगियन से धर प्यार ॥ ३ ॥
ले उपदेश गुरू से सारा।
सुमिरन नाम करत आधार ॥ ४ ॥
ध्यान धरत घट निरख उजारी।
मगन होत सुन धुन झनकार ॥ ५ ॥
परचा पाय घट बढ़त उमंगा।
गुरु चरनन धरा तन मन वार ॥ ६ ॥
प्रीत प्रतीत पकाय हिये में।
सरन गही अब आपा डार ॥ ७ ॥
नित प्रति सुरत अधर में चढ़ती।
सहसकंवल त्रिकुटी दस द्वार ॥ ८ ॥
भंवरगुफा सतलोक निहारत।
अलख अगम के पहुंची पार ॥ ९ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनाया।
छिन छिन चरनन पर बलिहार ॥१०॥

॥ शब्द ८५ ॥

सुरतिया लीन हुई ।
चरनन में रूप निहार ॥ १ ॥
महिंमा सुन सतसंग में आई ।
बचन सुने अनुराग सम्हार ॥ २ ॥
जगत बासना त्यागी छिन में ।
भोग दिये तज जान बिकार ॥ ३ ॥
मोह जाल का फंदा काटा ।
करम धरम का भार उतार ॥ ४ ॥
प्रीत करत अब गुरु संग पूरी ।
हिये दृढ़ निश्चय धार ॥ ५ ॥
निज कर सरन गही सतगुरु की ।
राधास्वामी चरन बढ़ावत प्यार ॥ ६ ॥
ले उपदेश चलत अब घट में ।
पकड़ शब्द की धार ॥ ७ ॥
जोत निरख पहुंची गगनापुर ।
चंद्र रूप लख गुफा उजार ॥ ८ ॥

सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥ ९ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझाती।
छिन छिन पियत अमीरस सार ॥१०॥

॥ शब्द ८६ ॥

सुरतिया धीर धरत।
नित करनी करत सम्हार ॥ १ ॥
बिरह अनुराग धार घट अंतर।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सुन उपदेश मगन हुई मन में।
नित्त बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥
घट का भेद समझ सतगुरु से।
सुरत लगावत धुन की लार ॥ ४ ॥
सुमिरन कर घट होत सफ़ाई।
ध्यान लाय गुरु रूप निहार ॥ ५ ॥
नित प्रति घट में बढ़त उजारी।
शब्द मचावत अधिक पुकार ॥ ६ ॥